चरनदास जी की बानी

भाग २

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स

इलाहाबाद

[तीसरी बार

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan

चरनदासजी की बानी

दूसरा भाग

जिसमें

उनके ग्रंथ के अति मनोहर और हृदय बेधक भजन, चौपाई, दोहे आदिक, कई प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों से चुन कर मुख्य मुख्य अंगों और रागों के अनुसार यथाक्रम रक्खे गये हैं

और

गूढ़ कड़ियों व कड़े या अनूठे शब्दों के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स

इलाहाबाद

सन् १८७६ ई०]

[मूल्य ॥)

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan
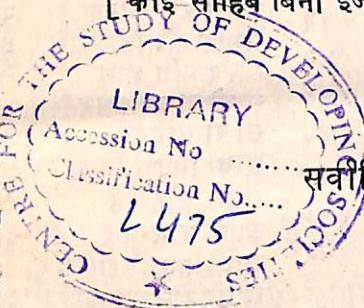
॥ अंगों का सूचीपत्र ॥

नाम अंग और उसके आधीन विषयों का

शब्दों की सूची

चरनदासजी की बानी--दूसरा भाग

भेद बानी

॥ शब्द १ होली राग धनाश्री ॥

गुरु दूती[1] बिन सखी पीव न देखो जाय।
भावैं तुम जप तप करि देखो भावैं तीरथ न्हाय ॥ १ ॥
पाँच सखी पच्चीस सहेली अति चातुर अधिकाय।
मोहिं अयानी जानि कै मेरो बालम लियो लुकाय[2] ॥ २ ॥
बेद पुरान सबै जो ढूँढ़े स्रुति इस्मृति सब धाय।
आनि धर्म औ क्रिया कर्म में दीन्हो मोहिं भरमाय ॥ ३ ॥
भटकत भटकत जन्मै हारी चरन सखी गहे आय।
सुकदेव साहब किरपा करिकै दीन्हो अलख लखाय ॥ ४ ॥
देखत हीं सब भ्रम भय भागे सिर सूँ गई बलाय।
चरनदास जब प्रीतम पायो दरसन कियो अघाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ राग केदारा ॥

अवधू सहसदल अब देख।
सेत रंग जहँ पंखरो[3] छबि अग्र डोर बिसेख ॥ १ ॥
अमृत बर्षा होत अति झरि तेज पुञ्ज प्रकास।
नाद अनहद बजत अद्भुत महा ब्रह्म बिलास ॥ २ ॥
घंट[4] किंकिनि[4] मुरलि[4] बाजे संख[4] धुनि मन मान।
ताल[4] भेरि[4] मृदंग[4] बाजत सिंधु गरजन जान ॥ ३ ॥
काल की जहँ पहुँच नाहीं अमर पदवी पाव।
जीति आठौ सिद्धि ठाढ़ी गगन मद्धे आव ॥ ४ ॥
करै गुरु परताप करनी जाय पहुँचै सोय।
चरनदास सुकदेव किरपा जीव ब्रह्मै होय ॥ ५ ॥

---

(१) बिचौलिया। (२) छिपाय। (३) कँवल की पखरी। (४) बाजों के नाम।

॥ शब्द ३ राग बिहागरा ॥

सब जग पाँच तत्व को उपासी ॥ टेक ॥
तुरियातीत सबन सूँ न्यारा अबिनासी निर्बासी ॥ १ ॥
कोई पूजै देवल मूरत सो पृथ्वी तत जानो ॥ २ ॥
कोई न्हावै पूजै तीरथ सो जल को तत मानो ॥ ३ ॥
अग्निहोत्र अरु सूरज पूजा सो पावक तत देखा ॥ ४ ॥
पवन खैंच कुम्भक को राखै वायु तत्त को लेखा ॥ ५ ॥
कोई तत्व अकास[1] को पूजै ता को ब्रह्म बतावै ॥ ६ ॥
जो सब के देखन में आवै सो क्यों अलख कहावै ॥ ७ ॥
परम तत्व[2] पाँचौ से आगे गुरु सुकदेव बखानैं ॥ ८ ॥
चरनदास निस्चै मन आनौ बिरला जन कोइ जानै ॥ ९ ॥

॥ शब्द ४ राग परज ॥

सुधा रस कैसे पैये हो।
कूप कहाँ केहि ठौर है कैसे करि लहिये हो ॥ १ ॥
नेजू[3] कित कित गागरी कित भरने वाली हो।
कैसे खुलै कपाट हीं को ताला ताली हो ॥ २ ॥
कौन समय किस ग्रह बिषै अँचवै किन माहीं हो।
तुमसे[4] जानैं भेद कूँ अरु बहुतक नाहीं हो ॥ ३ ॥
पीकर किस कारज लगै अरु स्वाद बतावो हो।
फल या का कहि दीजिये सब खोलि जतावो हो ॥ ४ ॥
सुकदेव सूँ पूँछन करै यह चरनहिं दासा हो।
किरपा करिकै कीजिये मेरि पूरन आसा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ राग सोरठ ॥

जब गुरु शब्द नगारे बाजैं ॥ टेक ॥

---

(१) चिदाकाश (चैतन्य आकाश) जिसको कोई कोई विद्याज्ञानी ब्रह्म मानते हैं। (२) शब्द चैतन्य अर्थात् वह जौहर जिसको संतों ने शब्द करके पुकारा है। (३) लेजुर, रज्जू, रस्सी। (४) तुम्हारे समान।

पाँच पचीसौं बड़े मवासी[1] सुनि के डंका भाजै ॥ १ ॥
दृढ़ दस्तक ले ज्ञान सजावल जाय नगर के माहीं ॥ २ ॥
हरि के धाम भजन कर[2] माँगे चित्त चौधरी पाहीं ॥ ३ ॥
कानूँगोय लोभ के खोटे छल बल पाहीं झूठे ॥ ४ ॥
काम किसान औ मोह मुकद्दम सबै बाँधि कर लूटे ॥ ५ ॥
तृस्ना आमिल मद को मातो पकरि गाँव सूँ काढ़ै ॥ ६ ॥
मन राजा को निस्चल झंडा प्रेम प्रीत हित गाड़ै ॥ ७ ॥
सुबुधि दिवान सील को बक्सी जत को हाकिम भारी ॥ ८ ॥
धर्म कर्म संतोष सिपाही जाके अज्ञाकारी ॥ ९ ॥
साँच करिन्दा औ पटवारी धीरज नेम बिचारै ॥१०॥
दया छिमा औ बड़ी दीनता पूरी जमा सँभारै ॥११॥
मगन होय चौकस कन[3] करिकै सुमति जेवरी[4] मापै ॥१२॥
दरसन द्रव्य ध्यान को पूरन बाँटा पावै आपै ॥१३॥
श्री सुकदेव अमल करि गाढ़ो सूबस देस नसावै ॥१४॥
चरनदास हूँ तिन को नायब तत परवाना पावै ॥१५॥

॥ शब्द ६ कारखा ॥

परसिया देस जहँ भेस नाहीं ।
घाट तिस लखि जहाँ बाट सूझै नहीं
सुरति के चाँदने संत जाई ॥ १ ॥
चंद खोड़स दिपैं गंग उलटी बहै
सुखमना सेज पर लम्प[5] दमकै ।
तासु के ऊपरै अमी को ताल है
झिलमिली जोत परकास चमकै ॥ २ ॥
चारि जोजन परे सून्य अस्थान है
तेज अति सून्य परलोक राजै ।

(१) जबरदस्त । (२) महसूल, लगान । (३) खेत की पैदावार का कूत या तख़मीना । (४) डोरी । (५) जोति ।

द्वार पच्छिम धसे मेरु हीं दण्ड हो
उलट करि आय छाजे बिराजे ॥ ३ ॥
नूर जगमग करै खेल आगाध है
बेद हूँ कहे नहिं पार पावैं ।
गुरुमुखी जाइ हैं अमर पद पाइ हैं
सीस का लोभ तजि पंथ धावैं ॥ ४ ॥
तीन सुन छेदि रनजीत चौथे बसै
जन्म औ मरन फिर नाहिं होई ।
चरनदास करि वास सुकदेव बकसीस सूँ
पूज बेगम पुरी अमर सोई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ राग सोरठ ॥

गुरु बिन वह घर कौन दिखावै ।
जेहि घर अग्नि जलै जल माहीं यह अचरज दरसावै ॥ १ ॥
काम धेनु जहँ ठाढ़ी सोहैं नैन हाथ बिन दुहना ।
घाये[१] दूधा थोड़ा देवै भूखे देवै दूना ॥ २ ॥
पीवैं जन जगदीस पियारे गुरुगम बहुत अघावैं ।
मूरख कायर और अजोगी सो ये नेक न पावैं ॥ ३ ॥
अमृत अँचवै वा पद पद पहुँचै महा तेज को धारै ।
होय अमर निस्चल ह्वै बैठै आवा गवन निवारै ॥ ४ ॥
भेद छिपावे तो फल पावे काहू से नहि कहिये ।
वह अद्भुत है ठौर अनूठी बड़ भागन सूँ लहिये ॥ ५ ॥
या साधन के बहु रखवारे ऋषि मुनि देवत[२] जोगी ।
करन न देवैं बुधि हरि लेवैं होय न गोरस भोगी ॥ ६ ॥
लोभी हलके को नहिं दीजे कहैं सुकदेव गोसाईं ।
चरनदास त्यागी बैरागी ताहि देहु गहि बाँहीं ॥ ७ ॥

---

(१) अघाये । (२) देवता ।

॥ शब्द ८ राग सोरठ ॥

गुरु गम मगन भया मन मेरा।
गगन मंडल में निज घर कीन्हो पंच बिष नहिं घेरा ॥ १ ॥
प्यास छुधा निद्रा नहिं ब्यापी अमृत अँचवन कीन्हा।
छूटी आस बास नहिं कोई जग में चित नहिं दीन्हा ॥ २ ॥
दरसी जोति परम सुख पायो सब ही कर्म जलावै।
पाप पुन्न दोऊ भय नाहीं जन्म मरन बिसरावै ॥ ३ ॥
अनहद आनंद अति उपजावै कहि न सकूँ गति सारी।
अति ललचावै फिर नहिं आवै लगी अलख सूँ थारी ॥ ४ ॥
हंस कमल दल सतगुरु राजें रुचि रुचि दरसन पाऊँ।
कहि सुकदेव चरन हीं दासा सब बिधि ताहि बताऊँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ राग रामकली ॥

वह अच्छर कोइ बिरला पावै।
जा अच्छर के लाग न बिंदी सतगुरु सैनहि सैन बतावै ॥ १ ॥
छर ही नाद बेद अरु पंडित छर ज्ञानी अज्ञानी।
बाँचन अच्छर छर ही जानो छरही चारो बानी ॥ २ ॥
ब्रह्मा सेस महेसर छर ही छर ही त्रैगुन माया।
छर ही सहित लिये औतारा छर ह्वाँ तक जहँ माया ॥ ३ ॥
पाँचो मुद्रा जोग जुक्ति छर छर ही लगै समाधा।
आठौ सिद्धि मुक्ति फल छरही छर ही तन मन साधा ॥ ४ ॥
रबि ससि तारा मंडल छर ही छर ही धरनि अकासा।
छर ही नीर पवन अरु पावक नर्क स्वर्ग छर बासा ॥ ५ ॥
छर ही उतपति परलय छर ही छर ही जानन हारा।
चरनदास सुकदेव बतावैं निःअच्छर है सब सूँ न्यारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० राग धनाश्री ॥

जो जन अनहद ध्यान धरै ॥ टेक ॥
पाँचौ निरबल चंचल थाकैं जीवत ही जु मरै ॥ १ ॥

सोधै मूलबंध दै राखै आसन सिद्ध करै ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुरति लाय ठहरावै कुम्भक पवन भरै ॥ ३ ॥
घन गरजै अरु बिजुली चमकै कौतुक गगन धरै ॥ ४ ॥
बहुत भाँति जहँ बाजन बाजैं सुनि सुनि सिंधु अरै[1] ॥ ५ ॥
सहज सहज में हो परकासा बाधा सकल हरै[2] ॥ ६ ॥
जग की आस बास सब टूटै ममता मोह जरै ॥ ७ ॥
सून्य सिखर पर आपा बिसरै काल सूँ नाहिं डरै ॥ ८ ॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं सब गुन ध्यान धरै ॥ ९ ॥

॥ शब्द ११ राग धनाश्री ॥

जब से अनहद घोर सुनी।
इन्द्री थकित गलित मन हूवा आसा सकल भुनी ॥ १ ॥
घूमत नैन सिथिल भइ काया अमल जु सुरत सनी।
रोम रोम आनन्द उपज करि आलस सहज भनी ॥ २ ॥
मतवारे ज्यों शब्द समाये अन्तर भींज कनी।
करम भरम के बन्धन छूटे दुबिधा बिपति हनी ॥ ३ ॥
आपा बिसरि जक्त कूँ बिसरो कित रहिं पाँच जनी।
लोक भोग सुधि रही न कोई भूले ज्ञानि गुनी ॥ ४ ॥
हो तहँ लीन चरनहीं दासा कहै सुकदेव मुनी।
ऐसा ध्यान भाग सूँ पैये चढ़ि रहै सिखर अनी[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ राग धनाश्री ॥

सहज गति ज्ञान समाधि लगाई।
रूप नाम जहँ किरिया छूटी, हौं मैं रहन न पाई ॥ १ ॥
बिन आसन बिन संजम साधन, परमातम सुधि पाई।
सिव सक्ती मिलि एक भये हैं, मन माया निहुराई[4] ॥ २ ॥
मगन रहौं दुख सुख दोउ मेटे, चाह अचाह मिटाई।

---

(१) ऐसे मधुर बाजे कि जिनकी धुनि से समुद्र की लहरें स्थिर हो जायँ। (२) दूर हो। (३) नोक। (४) झुके, जेर हुए।

जीवन मरन एक सूँ लागै, जब तें आप गँवाई ॥ ३ ॥
मैं नाहीं नख सिख हरि राजैं, आदि अन्त मध्याई ।
संका कर्म कौन कूँ लागै, का की होय मुक्ताई ॥ ४ ॥
सकल आपदा व्याधि टरी सब, दुई कहाँ मो माहीं ।
सब हमहीं रामै नहिं पैये, सब रामै हम नाहीं ॥ ५ ॥
नित आनन्द काल भय नाहीं, गुरु सुकदेव समाधो ।
चरनदास निज रूप समाने, यह तो समझ अगाधो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ राग करखा ॥

ब्रह्म दरियाव नहिं वार पारा ।
आदि अरु मध्य कहुँ अन्त सभ्क नहीं
नेत हो नेत बेदन पुकारा ॥ १ ॥
मूल परकिर्त सी बहुत लहरैं उठैं
सकै को पाय गुन हैं अपारा ।
बिरंच[1] महादेव से मीन बहुतै जहाँ
होयँ परगट कभी गोत मारा ॥ २ ॥
तासु में बुदबुदे अंड उपजैं मिटैं
गुरु दई दृष्टि जा सूँ निहारा ।
छका छबि देखि कै अतिथि का भेख करि
जगे जब भाग निरखी बहारा ॥ ३ ॥
मरजिया[2] पैठिया थाह पाई नहीं
थका ह्वाहीं रहा फिर न आया ।
गया था लाभ कूँ मूल खोया सबै
भया आस्चर्ज आपन गँवाया ॥ ४ ॥
पाल[3] बिन सिद्धि अरु निरा आनन्द है

(१) ब्रह्मा । (२) जो मोती निकालने को समुद्र में डुबकी लगाते हैं । (३) रोक, परदा ।

आप ही आप हो निरअधारा।
चरनदास सुकदेव दोऊ तहाँ रल मिले,
तुरत हीं मिटि गया खोज सारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ राग सीठना ॥

सुन सुरत रँगीली हो कि हरि सा यार करौ ॥ टेक ॥
जब छूटै बिघ्न बिकार कि भौजल तुरत तरौ ॥ १ ॥
तुम त्रैगुन छैल[1] बिसारि गगन में ध्यान धरौ ॥ २ ॥
रस अमृत पीवो हो कि बिषया सकल हरौ ॥ ३ ॥
करि सोल संतोष सिंगार छिमा की माँग भरौ ॥ ४ ॥
अब पाँचो तजि लगवार अमर घर पुरुष बरौ ॥ ५ ॥
कहैं चरनदास गुरु देखि पिया के पाँव परौ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ राग सीठना ॥

टुक रंग महल में आव कि निरगुन सेज बिछी।
जहँ पवन गवन नहिं होय जहाँ जा सुरति बसी ॥ १ ॥
जहँ त्रैगुन बिन निर्बान जहाँ नहिं सूर ससी।
जहँ हिल मिलि कै सुख मान मुक्ति की होय हँसी ॥ २ ॥
जहँ पिय प्यारी मिलि एक कि आसा दुई नसी।
जहँ चरनदास गलतान कि सोभा अधिक लसी ॥ ३ ॥

॥ शब्द १६ राग सोरठ ॥

ऐसा देस दिवाना रे लोगो जाय सो माता होय।
बिन मदिरा मतवारे झूमैं जन्म मरन दुख खोय ॥ १ ॥
कोटि चंद सूरज उजियारो रबि ससि पहुँचत नाहीं।
बिना सीप मोती अनमोलक बहु दामिनि दमकाहीं ॥ २ ॥
बिन ऋतु फूले फूल रहत हैं अमृत रस फल पागे।
पवन गवन बिन पवन बहत है बिन बादर झरि लागे ॥ ३ ॥

---

(१) छैल चिकनिया।

अनहद शब्द भँवर गुंजारै संख पखावज बाजैं ।
ताल घंट मुरली घनघोरा भेरि दमामे गाजैं ॥ ४ ॥
सिद्धि गर्जना अति हीं भारी घुँघुरू गति झनकारैं ।
रंभा नृत्य करैं बिन पग सूँ बिन पायल ठनकारैं ॥ ५ ॥
गुरु सुकदेव करैं जब किरपा ऐसो नगर दिखावैं ।
चरनदास वा पग के परसे आवा गवन नसावैं ॥ ६ ॥

॥ शब्द १७ राग होली ॥

पाँच सखी लेलार[1] हेली काया महल पग धारिये ॥ टेक ॥
जोग जुक्ति डोला करौ हेली प्रान अपान कहार ॥ १ ॥
कुंज कुञ्ज सब देखिये हेली नाना बाग बहार ॥ २ ॥
मान सरोवर न्हाइये हेली सदा बसन्त निहार ॥ ३ ॥
बिना सोप मोती बने हेली बिन गूँद[2] फूलन हार ॥ ४ ॥
बिन दामिन चमकार है हेली बिन सूरज उँजियार ॥ ५ ॥
अनहद उत बाजे बजैं हेली अचरज बहुतक ख्याल ॥ ६ ॥
तेज पुञ्ज की सेज पै हेली कागा होहिं मराल ॥ ७ ॥
श्री सुकदेव कृपा करैं हेली जब पावै यह भेद ॥ ८ ॥
चरनदास पिय सूँ मिलै हेली छूटैं जग के खेद ॥ ९ ॥

॥ शब्द १८ राग मलार ॥

साधो समुझौ अलख अरूपा ।
गुप्त सूँ गुप्त प्रगट सूँ परगट, ऐसो है निज रूपा ॥ १ ॥
भीजै नहीं नीर सूँ वह तत, ताहि सस्त्र नहिं काटै ।
छोटा मोटा होय न कबहूँ, नहीं घटै नहिं बाढ़ै ॥ २ ॥
पवन कभी नहिं सोखै ता कूँ, पावक तेज न जारै ।
सीत उस्न दुख सुख नहिं पहुँचै, ना वह मरै न मारै ॥ ३ ॥
इक रस चेतन अचरज दरसै, जा सम तुल नहिं कोई ।
ता पटतर कोइ दृष्टि न आवै, वही वही पुनि वोई ॥ ४ ॥

(१) साथ। (२) बिना गुथे हुए।

भीतर बाहर पूरि रह्यो है, अगड पिगड सूँ न्यारा।
सुकदेवा गुरु भेद बतायो, चरनहिं दासा वारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ धनाश्री ॥

निरंतर अटल समाधि लगाई।
ऐसी लगी टरै नहिं कबहूँ करनी आस छुटाई ॥ १ ॥
काकौ जप तप ध्यान कौन कूँ कौन करै अब पूजा।
कियो बिचार नेक नहिं निकसै हरि बिन और न दूजा ॥ २ ॥
मुद्रा पाँच सहज गति साधी आलस आस नसोई[1]।
सब रस भूल ब्रह्म जब सोधा आप बिसर्जन होई ॥ ३ ॥
भूलो बंध मुक्ति गति साधन ज्ञान बिबेक भुलाना।
आतम अरु परमातम भूला मन भयो तत गलताना ॥ ४ ॥
अचल समाधि अंत नहिं ता को गुरु सुकदेव बताई।
चरनदास की खोज न पैये सागर लहरि समाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० राग केदारा व सोरठ ॥

सो लखि हम निर्गुन झरि लाई।
जहाँ न बेद कितेब पहुँचै नहीं ठकुराई ॥ १ ॥
चारि बरन आस्रम नाहीं नहीं कर्मना कोई।
नरक अरु बैकुगठ नाहीं नहीं तन ताई ॥ २ ॥
प्रेम अरु जहँ नेम नाहीं लगन ना लाई।
आठ अंग जहँ जोग नाहीं नहीं सिद्धाई ॥ ३ ॥
आदि अरु जहँ अन्त नाहीं नहीं मध्याई।
एक ब्रह्म अखगड अबिचल माया ना राई ॥ ४ ॥
ज्ञान अरु अज्ञान नाहीं नहीं मुक्ताई।
चरनदास सुकदेव सम[2] तहँ दुई जरि जाई ॥ ५ ॥

---

(१) नाश हुई। (२) बराबर, एक।

॥ शब्द २१ राग हिंडोलना ॥

झूलत हरि जन संत भक्ति हिंडोलने ॥ टेक ॥

नाम के दृढ़ खम्भ रोपे प्रेम डोरी लाय।
टेक पटरी बैठ सजनी अति अनंद बढ़ाय ॥ १ ॥
ध्यान के जहँ मेघ बरसैं होय उमंग हुलास।
गुरुमुखी जहँ समझ भीजैं पूर्न हरि के दास ॥ २ ॥
बुधि बिबेक बिचारि गावैं सखी सहेली साथ।
अगम लीला रटैं सजनी जहाँ ब्रह्म बिलास ॥ ३ ॥
परम गुरु श्री जनक झूलैं झूलैं गुरु सुकदेव।
चरनदास सखि सदा झूलैं कोइ न पावै भेव ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ राग करखा ॥

गुरु दया जोग यहि बिधि कमायो ॥ टेक ॥

मूल कूँ सोधि संकोच करि संखिनी,
खैंचि आपान उलटो चलायो ॥ १ ॥
बंध पर बंध जब बंध तीनो लगैं,
पवन भइ थकित नभ गर्जि आयो ॥ २ ॥
द्वादसा पलट करि सुरति दो दल धरी,
दसो परकार अनहद बजायो ॥ ३ ॥
रोक जब नवन कूँ द्वार दसवें चढ़ी,
सून्य के तख्त अनँद बढ़ायो ॥ ४ ॥
सहल दल कमल को रूप अद्भुत महा,
अमी रस उमंग आ झरि लगायो ॥ ५ ॥
तेज अति पुञ्ज पर लोक जहँ जगमगे,
कोटि छबि भानु परकास लायो ॥ ६ ॥
उनमुनी और चित हेत करि बसि रहो,
देखि निज रूप मनुवाँ मिलायो ॥ ७ ॥

काल अरु ज्वाल जग ब्याधि सब मिटि गई,
जीव सूँ ब्रह्म गति बेगि पायो ॥ ८ ॥
चरनदास रनजीत सुकदेव की दया सूँ,
अभय पद परसि अवगति समायो ॥ ९ ॥

॥ शब्द २३ राग सारंग व बिलावल व सोरठ ॥

साधो अजब नगर अधिकाई ।
औघट घाट बाट जहँ बाँको उस मारग हम जाई ॥ १ ॥
स्रवन बिना बहु बानी सुनिये बिन जिभ्या स्वर गावैं ।
बिना नैन जहँ अचरज दीखै बिना अंग लिपटावैं ॥ २ ॥
बिना नासिका बास पुष्प की बिना पाँव गिर[1] चढ़िया ।
बिना हाथ जहँ मिली धाय के बिन पाधा जहँ पढ़िया ॥ ३ ॥
ऐसा घर बड़भागी पाया पहिरि गुरू का बाना ।
निस्चल ह्वै के आसा मारी मिटि गयो आवन जाना ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव करी जब किरपा अनुभो बुद्धि प्रकासी ।
चौथे पद में आनन्द भारी चरनदास जहँ बासी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ राग सीठना ॥

टुक निर्गुन छैला सूँ, कि नेह लगाव री ।
जा को अजर अमर है देस, महल बेगमपुर री ॥ १ ॥
जहँ सदा सोहागिन होय, पिया सूँ मिलि रहु री ।
जहँ आवा गवन न होय, मुक्ति चेरी तेरी ॥ २ ॥
कहैं चरनदास गुरु मिले, सोई ह्वाँ रहु बौरी ।
तब सुख सागर के बीच, कलहरी[2] ह्वै रहु री ॥ ३ ॥

॥ शब्द २५ राग सीठना ॥

तू सुन हे लंगर बौरी ॥ टेक ॥
तू पाँचौ घेरि पचीसो घेरो बिषै बासना की है चेरी ।
बारी बारी[3] दौरी ॥ १ ॥

---

(१) पहाड़ । (२) कलवारिन । (३) बार बार ।

तैं पिय भूली चौरासी डोली अंग अंग के सुख में फूली।
माया लाई ठौरी[1] ॥ २ ॥
तैं काम क्रोध सूँ नेह लगायो मनमाना सब जग भरमायो।
मोह यार बाँको री ॥ ३ ॥
चरनदास सुकदेव बतावैं निर्गुन छैला तोहिं मिलावैं।
जो टुक चेतन हो री ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ राग हेली ॥

वह घर कैसा होय हेली जित के गये न बाहुरे[2]।
अमर पुरी जा सूँ कहैं हेली मुक्ति धाम है सोय ॥टेक॥
बिकट घाट वा ठौर को हेली सठ नहिं पावैं पंथ।
गुरुमुख ज्ञानी जाइ हैं हरि सूँ सन्मुख संत ॥ १ ॥
त्रैगुन मति पहुँचै नहिं हेली अहो ऋतू हाँ नाहिं।
रवि ससि दोऊ हाँ नहीं नहीं धूप नहिं छाँहि ॥ २ ॥
अवधि नहीं काया नहि हेली कलह कलेस न काल।
संसय सोक न पाइये नहिं माया कूँ जाल ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया करैं हेली चरनदास लहै देस।
बिन सतगुरु नहिं पावई जो नाना कर भेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द २७ राग सोरठ ॥

हो अवगति जो जानै सोई जानै।
सब की दृष्टि परे अबिनासी कोइ कोइ जन पहिचानै ॥ १ ॥
रेख जहाँ नहिं खिंच सकै रे ठहरै ना हाँ राई।
चित्त चितेरा[3] ना सकै रे पुस्तक लिखा न जाई ॥ २ ॥
सेत स्याम नहिं राता[4] पीरा हरी भाँति नहिं होई।
अति आसूँध अदृष्ट अकथ है कहि सुनि सकै न कोई ॥ ३ ॥

---

(१) निवास, ठिकाना (२) लौटे। (३) चित्त से चितवन करना। (४) लाल रंग का।

सर्बस में अरु सब देसन में सर्ब अंग सब माहीं।
कटै जलै भीजै नहिं छीजै हलै चलै वह नाहीं ॥ ४ ॥
नहिं गाढ़ा नहिं झीना कहिये नहिं सूच्छम नहिं भारी।
बाला तरुना बूढ़ा नाहीं ना वह पुरुष न नारी ॥ ५ ॥
नहीं दूर नहिं निकट हमारे नहीं प्रगट नहिं गूझै[1]।
ज्ञान आँख की पलक उघारो जब देखो रे सूझै ॥ ६ ॥
वा सूँ उतपति परलय होई वह दोऊ तें न्यारा।
चरनदास सुकदेव दया सूँ सोई तत्त निहारा ॥ ७ ॥

॥ शब्द २८ राग ईमन ॥

सखी री हिलि मिलि रहिया पीव ॥ टेक ॥
पुष्प मध्य ज्यों गंध बिराजै पिण्ड माहिं ज्यों जीव ॥ १ ॥
जैसे अग्नि काठ के अंतर लाली है मेंहदीव ॥ २ ॥
माटी में भाँड़े हैं तैसे दूध मध्य ज्यों घीव ॥ ३ ॥
सुकदेवा गुरु तिमिर नसायो ज्ञान दियो कर दीव[2] ॥ ४ ॥
चरनदास कहें परगट दरसो अमर अखंडित सीव[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ राग बिलास बिहागरा ॥

गुरू बिन कौन डुबोवन हारा।
ब्रह्म समुद्र में जो कोइ बूड़ो छुटि गये सकल बिकारा ॥ १ ॥
सिंधु अथाह अगाध अचल है जा को वार न पारा।
वा की लहरि मिटत वाही में कौन तरै को तारा ॥ २ ॥
त्रैगुन रहित सदा हीं चेतन ना काहू उनहारा[4]।
निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा ॥ ३ ॥
अकरी[5] अलख अरूप अनादो तिमिर नहीं उजियारा।
ता में अंड दिपत[6] ऐसे करि ज्यों जल मद्धे तारा ॥ ४ ॥

---

(१) छिपा हुआ। (२) ज्ञान का हाथ में दीपक दिया। (३) स्वामी। (४) पटतर, मिस्ल। (५) अकर्ता। (६) चमकता है।

काल जाल भय भूतो नाहीं तहाँ नहीं भ्रम भारा।
चरनदास सुकदेव दया सूँ बूड़ि गये ही पारा ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० राग धनाश्री व बिलावल व सोरठ ॥

साधो भाई यह जग यों सत नाहीं।
मीन पहार समुद बिच मिरगा खेत अकासे माहीं ॥ १ ॥
जल की पोट कोट धूवाँ को अखिल ब्रह्म को तीरं।
बाँझ को पूत सींग सस्सा[1] को मृग तृस्ना को नीरं ॥ २ ॥
स्वप्न को भूप द्रब्य स्वपने को अरु जंगल को द्वारं।
गनिका सील नाच भतन को नारि सों ब्याहत नारं ॥ ३ ॥
मावस को ससि रैन को सूरज दूध नरन की छाती।
यह सब कहनि कहावनि देखी चींटी ले भागी हाथी ॥ ४ ॥
ऐसोहि झूँठ जगत सच नाहीं भेद बिचारो पायो।
चरनदास सुकदेव दया सूँ साँचहि साँच मिलायो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ राग धनाश्री ॥

कोइ जानै संत सुजान उलटे भेद कूँ ॥ टेक ॥
बृच्छ चढ़ो माली के ऊपर धरती चढ़ी अकास।
नारि पुरुष बिपरीत भये हैं देखत आवै हाँस ॥ १ ॥
बैल चढ़ो संकर के ऊपर हंस ब्रह्म के सीस।
सिंह चढ़ो देवी के ऊपर गुरुहीं की बक्सीस ॥ २ ॥
नाव चढ़ी केवट के ऊपर सुत की गोदी माय।
जो तू भेदी अमर नगर को तो तू अर्थ बताय ॥ ३ ॥
चरनदास सुकदेव सहाई अब कह करिहै काल।
बाँबी उलटि सर्प में पैठी जब सूँ भये निहाल ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३२ राग मलार ॥

चहुँ दिस झिलमिल झलक निहारी।
आगे पीछे दहिने बायें तल ऊपर उँजियारी ॥ १ ॥

---

(१) खरहा।

दृष्टि पलक त्रिकुटी ह्वै देखै आसन पद्म लगावै।
संजम साधै दृढ़ आराधै जब ऐसी सिधि पावै॥ २॥
बिन दामिनि चमकार बहुत हीं सीप बिना लर मोती।
दीप मालिका बहु दरसावैं जगमग जगमग जोती॥ ३॥
ध्यान फलै तब नभ के माहीं पूरन हो गति सारी।
चाँद घने सूरज अनकी[1] ज्यों सूभर[2] भरिया भारी॥ ४॥
यह तौ ध्यान प्रतच्छ बतायौ सरधा होय तो कीजै।
कहि सुकदेव चरन हीं दासा सो हम सूँ सुनि लीजै॥ ५॥

॥ शब्द ३३ राग सोरठ॥

हमारे गुरु मारग बतलाया हो।
आनि देव की सेवा त्यागो अज[3] अबिनासी ध्याया हो॥ १॥
हरि पूरन परस्यों निस्चै सूँ छाँड़यों झूठी माया हो।
इक रस आतम नित हीं जानौं छिन भंगी है काया हो॥ २॥
चाहो मुक्ति करो तन किरिया[4] भर्म अधिक भरमाया हो।
बो करि पेड़ बबूल सूल के आम कहो किन पाया हो॥ ३॥
अपना खोज किया नहिं कबहूँ जल पाहन भटकाया हो।
जैसे फल सेवत सेमर को कीर[5] अधिक पछताया हो॥ ४॥
ज्ञान पदारथ कठिन महानिधि बिन भेदी किन पाया हो।
चरनदास घट सोहं सोहं ता में उलटि समाया हो॥ ५॥

॥ शब्द ३४ बिहागरा॥

गुप्त मते की बात हेली जानै सोइ जानै।
पसू ज्ञान इजमत[6] कूँ देखौ अन भुस एकै ठानै॥ १॥
चलनी की गति सब की मति है मन में अधिक सयानै।
गहिं असार सार कूँ डारै निस्चल बुधि नहि आनै॥ २॥

---

(१) अनेक। (२) बालू के कण जो धूप में चमकते हैं। (३) अजर, अजन्मा। (४) तन क्रिया से मुक्ति नहीं हो सकती। (५) तोता। (६) करामात।

हूँ[१] गूँगो जग को नहिं सूझै सैन नहीं कोइ मानै ।
का सूँ कहूँ अरु को सुनै सजनी कहूँ तो को पहिचानै ॥ ३ ॥
सत्य ब्रह्म को जानत नाहीं मुरख मुग्ध अयानै ।
चरनदास समुझत नहिं भोंदू फिर फिर झगरो ठानै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ राग हिंडोलना ॥

झूलत गुरुमुख संत अलख हिंडोलने ॥ टेक ॥
नाभि भृकुटी खम्भ रोपे सोहं डोरी लाय ।
सुरति पटही[२] बैठि सजनी छिन आवै छिन जाय ॥ १ ॥
मन मनसा दोउ लगे झूलन धारना ले संग ।
ध्यान झोंके देत सजनी भलो लागो रंग ॥ २ ॥
सखि सहेली सिमिटि आईं पेंग पेंगन नेह ।
बूँद आनंद सब भिगोई सघन बरसै मेह ॥ ३ ॥
चार बानी खड़ी गावैं महा रंगीली नार ।
मुक्ति चारो मालिनी गुहि गुहि लावैं हार ॥ ४ ॥
त्रिगुन बकुला उड़न लागे देखि बादल लय[३] ।
संग पिय के सदा झूलैं ता तें लगै न भय ॥ ५ ॥
चरनदास कूँ नित झुलावैं ईस झुलैं सुकदेव ।
सिव सनकादिक नारद झूलैं करि करि गुरु की सेव ॥ ६ ॥

सावन व हिंडोला झूला

॥ शब्द १ राग हिंडोलना हेली ॥

छूटे काल जंजाल हेली, चरन कमल के आसरे ।
भर्म भूत सबहीं छुटे री हेली सौन[४] नछत्तर नाल[५] ॥टेक॥
जंतर मंतर सब छुटे री हेली छूटे बीर मसान ।
मूठ डीठ[६] अब ना लगै री नहीं घात को बान ॥ १ ॥

(१) गूँगे का "हूँ" करना । (२) पटरा । (३) समा । (४) स्रवन । (५) साथ । (६) जादू टोना ।

सनीचर बल अब ना चलै री हेली नहीं राहु अरु केतु ।
मंगल बिरस्पति ना दहैं री नहीं भोग उन देतु ॥ २ ॥
जोति बाल परसूँ नहीं री हेली मानूँ न देवी देव ।
सतगुरु देव बताइया साँचो झूँठो भेव ॥ ३ ॥
अरसठ तीरथ ना फिरूँ री हेली पूज न पाथर नीर ।
श्री सुकदेव छुटाइया जन्म मरन की पीर ॥ ४ ॥
निस्चल होइ हरि की भई री हेली सुमिरूँ निर्मल नाँव ।
अनन्य भक्ति दृढ़ सूँ गही मारग आन न जाँव ॥ ५ ॥
गोबिंद तजि औरन भजै री हेली जाके मुखड़े छार[1] ।
चरनदास यो कहत हैं राम उतारै पार ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ राग सावन ॥

सखि सजनो हे तेरो पिया तेरे पास ।
अरी बौरी इत उत भटकी क्यों फिरै जी ॥ १ ॥
सखि सजनी हे सुरति निरति करि देख ।
अरी बौरी अपने महल रंग मानिये जी ॥ २ ॥
सखि सजनी हे मान अहं सब खोय ।
अरी बौरी यह जोबन थिर ना रहै जी ॥ ३ ॥
सखि सजनी हे बालम सन्मुख होय ।
अरी बौरी पिछली अर[2] सब खोइये जी ॥ ४ ॥
सखि सजनी हे पिया मिलन को साज ।
अरी बौरी न्हाय सिंगार बनाइये जी ॥ ५ ॥
सखि सजनी हे चित की चौकी धराय ।
अरी बौरी नाइन सुमति बुलाइये जी ॥ ६ ॥
सखि सजनी हे सुचरचा अगिन जराव ।
अरी बौरी नीर गरम करि न्हाइये जी ॥ ७ ॥

(१) धूल । (२) अड़, टेक ।

सखि सजनी हे जोग उबटनो लगाव।
अरी बौरी कर्म को मैल उतारिये जी ॥ ८ ॥
सखि सजनी हे करनी कंगही बहाव।
अरी बौरी बेनी मुक्ता[१] गुंधाइये जी ॥ ९ ॥
सखि सजनी हे गुरु के चरन चित लाव।
अरी बौरी सत संगति पग लागिये जी ॥१०॥
सखि सजनी हे लाज सिंदूर निकासि।
अरी बौरी खोलि सिंगार बनाइये जी ॥११॥
सखि सजनी हे नवधा भूषन धारि।
अरी बौरी जा सूँ पिया रिझाइये जी ॥१२॥
सखि सजनी हे प्रीत को काजल आँज।
अरी बौरी प्रेम की माँग सँवारिये जी ॥१३॥
सखि सजनी हे बुधि बेसर साजि लेहि।
अरी बौरी पान बिचारि चबाइये जी ॥१४॥
सखि सजनी हे दया की मेंहदी लगाव।
अरी बौरी साँचो रंग ना उतरै जी ॥१५॥
सखि सजनी हे धीरज चूनरि लाल।
अरी बौरी नख सिख सील सिंगारिये जी ॥१६॥
सखि सजनी हे काम क्रोध तजि लोभ।
अरी बौरी मोह पीहर[२] सूँ जिन करो जी ॥१७॥
सखि सजनी हे पाँच सहेली साथ।
अरी बौरी इन कूँ संग न लीजिये जी ॥१८॥
सखि सजनी हे चलो पिया के पास।
अरी बौरी सुखमन बाट सोहावनी जी ॥१९॥
सखि सजनी हे गगन मंडल पग धार।
अरी बौरी पीव मिलै दुख सब हरै जी ॥२०॥

(१) मोती। (२) नैहर, मायका।

सखि सजनी हे निर्गुन सेज बिछाव।
अरी बौरी हिलि मिलि कै रंग मानिये जी ॥२१॥
सखि सजनी हे पावैगी अटल सोहाग।
अरी बौरी अजर अमर घर निर्मल जी ॥२२॥
सखि सजनी हे गुरु सुकदेव असीस।
अरी बौरी चरनदास मनसा फलै जी ॥२३॥

॥ शब्द ३ राग सावन ॥

भागौ साथिन हे यहि झूले मत झूल।
अरी हेली भर्म भूमि या देस की जी ॥ टेक ॥
भागौ साथिन हे बदरा[1] माया को रूप।
अरी हेली कुमति बूँद जित तित परैं जी ॥ १ ॥
भगौ साथिन हे कर्म बृच्छ की बेलि।
अरी हेली बारी फल लगे बिष भरे जी ॥ २ ॥
भागौ साथिन हे दुर्मति हरियर दूब।
अरी हेली छल रूपी फूले फूल हैं जी ॥ ३ ॥
भागौ साथिन हे तिरगुन बोलत मोर।
अरी हेली दम्भ कपट बकुला फिरैं जी ॥ ४ ॥
भागौ साथिन हे पाप पुन्न दोउ खम्भ।
अरी हेली नर्क[2] स्वर्ग झोटा लगै जी ॥ ५ ॥
भागौ साथिन हे मैं मेरी बँधी डोर।
अरी हेली तृस्ना पटरी जित धरी जी ॥ ६ ॥
भागौ साथिन हे झूलत चावहिं चाव।
अरी हेली नर नारी सब झूलहिं जी ॥ ७ ॥
भागौ साथिन हे तपसी जोगी गये भूल।
अरी हेली फल चाहत अरु कामना जी ॥ ८ ॥

(१) बादल। (२) पाताल।

भागो साथिन हे आसा झुलावत नारि।
अरी हेली पाँच पचीस मिलि गावहिं जी ॥ ९ ॥
भागो साथिन हे या जग में ऐसी झूल।
अरी हेली चरनदास झूलत बचे जी ॥१०॥
भागो साथिन हे इत तजि उत कूँ चाल।
अरी हेली अमर नगर सुकदेव के जी ॥११॥

॥ शब्द ४ राग हिंडोला हेली ॥

तरसैं मेरे नैन हेली राम मिलन कब होयगो ॥ टेक ॥
पिय दरसन बिन क्यों जिऊँ री हेली कैसे पाऊँ चैन।
तीर्थ बर्त बहुतै किये री चित दै सुने पुरान ॥ १ ॥
बाट निहारत ही रहूँ री हेली सुधि नहिं लीनी आय।
यह जोबन यों ही चलो री चालो जन्म सिराय ॥ २ ॥
बिरहा दल साजे रहै री हेली छिन छिन में दुख देहि।
मन लालन[1] के बस परो भई भाक[2] सी देहि ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव कृपा करो जी हेली दीजै बिरह छुटाय।
चरनदास पिय सूँ मिलै सरन तुम्हारी धाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ राग हिंडोला ॥

मो बिरहिन की बात हेली बिरहिन हो सोइ जानि है।
नैन बिछोहा जानती री हेली बिरहै कीन्हो घात ॥ टेक ॥
या तन कूँ बिरहा लगो री हेली ज्यों घुन लागो काठ।
निस दिन खाये जातु है देखूँ हरि का बाट ॥ १ ॥
हिरदे में पावक जरै री हेली तपि नैना भये लाल।
आँसू पर आँसू गिरैं यही हमारी हाल ॥ २ ॥
प्रीतम बिन कल ना परै री हेली कलकल[3] सब अकुलाहि।
डिगी[4] परूँ सत[5] ना रहो कब पिय पकरैं बाँहि ॥ ३ ॥

(१) प्रीतम। (२) भट्ठा, पजावा। (३) ब्याकुल। (४) गिरी। (५) सत्ता, बल।

गुरु सुकदेव दया करैं री हेली मोहिं मिलावैं लाल।
चरनदास दुख सब भजैं सदा रहूँ पति नाल[1] ॥ ४ ॥

बसंत व होली

॥ शब्द १ राग बसंत ॥

मेरे सतगुरु खेलत नित बसंत।
जा की महिमा गावत साध संत ॥ १ ॥
ज्ञान बिबेक के फूले फूल।
जहँ साखा जोग अरु भक्ति मूल ॥ २ ॥
प्रेम लता जहँ रही झूल।
सत संगति सागर के कूल ॥ ३ ॥
जहँ भर्म उड़त है ज्यों गुलाल।
अरु चोवा चरचै निस्चय बाल ॥ ४ ॥
जहँ सील छिमा को बरसै रंग।
काम क्रोध को मान भंग ॥ ५ ॥
हरि चरचा जित है अनंत।
सुनि मुक्त होत सब जीव जंत ॥ ६ ॥
आन धर्म सब जाहिं खोय।
राम नाम की जै जै होय ॥ ७ ॥
जहँ अपने पिय कूँ ढूँढ़ि लेव।
अरु चरन कँवल में सुरति देव ॥ ८ ॥
कहैं चरनदास दुख दुंद जाहिं।
जब प्रीतम सुकदेव गहैं बाँहिं ॥ ९ ॥

॥ शब्द २ राग बसंत ॥

वह बसंत रे वह बसंत ॥ टेक ॥
कोइ बिरला पावै वह बसंत।
जा की अद्भुत लीला रँग अनंत ॥ १ ॥

---

(१) साथ।

जहँ झिलमिलि झिलमिलि है अपार।
जहँ मोती बरसैं निराधार ॥ २ ॥
जहँ फूलन की लागी फुहार।
जहँ अनहद बाजे बहु प्रकार ॥ ३ ॥
जहँ ताल जो बाजे बिना हाथ।
जहँ संख पखावज एक साथ ॥ ४ ॥
जहँ बिन पग घुंघुरू की टकोर।
जहँ बिन मुख मुरली घना[1] घोर[2] ॥ ५ ॥
जहँ अचरज बाजे और और।
जहँ चन्द सूर नहिं साँझ भोर ॥ ६ ॥
जहँ अमृत दरवै कामधेन।
जहँ मान क्रोध नहिं मोह मैन ॥ ७ ॥
जहँ पाँचौ इन्द्री एक रूप।
जहँ थकित भये हैं मनुष भूप ॥ ८ ॥
सुकदेव बतावैं ऐसो खेल।
चर्नदास करो क्यों न वा सूँ मेल ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३ होली ॥

हिल मिल हारी खेलि लई हो बालमा घर पाइया ॥ टेक ॥
पाँच सखी पच्चीस सहेली अनंद मंगल गाइया ॥ १ ॥
समझ बूझ का चोवा चर्चा भर्म गुलाल उड़ाइया ॥ २ ॥
दुई गई जब इच्छा सी खेलन सकल बहाइया ॥ ३ ॥
चरनदास बासना तजि के सागर लहर समाइया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ होली ॥

सखी री तत मत ले संग खेलिये रस होरी हो ॥ टेक ॥
निर्गुन नित निधोर सरस रस होरी हो।
सखी री सील सिंगार सँवारी हो ॥ १ ॥

(१) बहुत या बड़ा। (२) शोर।

दुबिधा मान निवार सरस रस होरी हो।
सखी री बहुरि न ऐसो बार सरस रस होरी हो ॥ २ ॥
रहनी केसर घोरिये रस होरी हो।
सखी री सतगुन करि पिचकारि ले रस होरी हो ॥ ३ ॥
तम रज को भर मार सरस रस होरी हो।
सखी री गर्व गुलाल उड़ाइये रस होही हो ॥ ४ ॥
मोह मटुकिया डारि सरस रस होरी हो।
सखी री झिलमिल रंग लगाइये रस होरी हो ॥ ५ ॥
चंदन चरच विचार सरस रस होरी हो।
सखी री निस्चल सिद्धि समाइये रस होरी हो ॥ ६ ॥
रिमझिम झनक फुहार सरस रस होरी हो।
सखी री सुन्न नगर में निर्तिये रस होरी हो ॥ ७ ॥
अनहद झनक झिंगार सरस रस होरी हो।
सखी री सैन सुरत सूँ समझिये रस होरी हो ॥ ८ ॥
सोहं ब्रह्म खिलार सरस रस होरी हो।
सखी री पाँच पचीसों रल मिले रस होरी हो ॥ ९ ॥
मंगल शब्द उचार सरस रस होरी हो।
सखी री अलख पुरुष फगुवा लहो रस होरो हो ॥१०॥
चनंदास रमैया रमि रह्यो रस होरी हो।
सखी री दरसो है फाग अपार सरस रस होरी हो ॥११॥

॥ शब्द ५ होली ॥

हरि पीव कूँ पाइया सखि पूरन मेरे भाग।
सुख सागर आनंद में मैं नित उठि खेलूँ फाग ॥ १ ॥
चोवा चंदन प्रीत क सखि केसर ज्ञान घसाय।
पुष्प बास सूँ जो वह भीनो ता के अंग लगाय ॥ २ ॥
बेरंगी के रंग सूँ सखि गागर लई भराय।
सुन्न महल में जाय कै सखि पिय पर दइ ढरकाय ॥ ३ ॥

भरम गुलाल जब कर लियो सखि बालम गयो दुराय।
सतगुरु ने अंजन दियो तब सन्मुख दरसे आय ॥ ४ ॥
ताली लाई प्रेम की सखि अनहद नाद बजाय।
सर्ब भई पिय पायकै हम आनंद मंगल गाय ॥ ५ ॥
रल मिल प्रीतम ह्वै गये सखि दुई गई सब भाग।
चरनदास सुकदेव दया सूँ पायो अचल सोहाग ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ होली ॥

प्रेम नगर के माहिं होरी होय रही।
जब सों खेली हम हूँ चित दै आपन हूँ को खोय रही ॥ १ ॥
बहुतन कुल अरु लाज गँवाई रहो न कोई काम।
नाचि उठैं कभी गावन लागैं भूले तन धन धाम ॥ २ ॥
बहुतन की मति रंग रंगी है जिन को लागो प्रेम।
बहुतन को अपनी सुधि नाहीं कौन करै अस नेम ॥ ३ ॥
बहुतन की गदगद ही बानी नैनन नीर ढराय।
बहुतन की बौरापन लागी ह्वाँ की कही न जाय ॥ ४ ॥
प्रेमी की गति प्रेमी जानै जाके लागी होय।
चरनदास उस नेह नगर की सुकदेवा कहि सोय ॥ ५ ॥

सारांश निरूपन अंग

॥ शब्द १ राग मंगल ॥

जग में दो तारन कूँ नीका।
एक तौ ध्यान गुरू का कीजे दूजे नाम धनी का ॥ १ ॥
कोटि भाँति करि निस्चै कीयो संसय रहा न कोई।
सास्तर बेद पुरान टटोलें जिन में निकसा सोई ॥ २ ॥
इन हीं के पीछे सब जानो जोग जज्ञ तप दाना।
नौ बिधि नौधा नेम प्रेम सब भक्ति भाव अरु ज्ञाना ॥ ३ ॥
और सबै मत ऐसे मानौ अन्न बिना भुस जैसे।
कूटत कूटत बहुतै कूटा भूख गई नहिं तैसे ॥ ४ ॥

थोथा धर्म वही पहिचानो ता में ये दो नाहीं ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं समझि देख मन माहीं ॥ ५ ॥

॥ गुरु निरूपन ॥

॥ शब्द २ राग मंगल ॥

समझ रस कोइक[1] पावै हो ।
गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो ॥ १ ॥
बहुत मनुष ढूँढ़त फिरैं, अँधरे गुरु सेवैं हो ।
उनहूँ को सूझै नहीं औरन कहँ देवैं हो ॥ २ ॥
अँधरे को अँधरा मिलै नारी को नारी हो ।
ह्वाँ फल कैसे होयगा समझै न अनारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सिष दोऊ एक से एकै ब्यवहारा हो ।
गये भरोसे डूबि कै वै नरक मँझारा हो ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं चरनदास सूँ इन का मत कूरा हो ।
ज्ञान मुक्ति जब पाइये मिलै सतगुरु पूरा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ दोहा ॥

गुरु सेती सतगुरु बड़े, परमेसुर के रूप ।
मुक्ति छाँह पहुँचाय दें, जक्त छोड़ावैं धूप ॥
मुरशिद मेरा दिल दरियाई दिल दे अंदर खोजा ।
उस अंदर में सत्तर काबे मक्के तीसो रोज़ा ॥ १ ॥
चौदह तबक़ औलिया जिसमें भेंट न होहि जुदाई ।
शब्द के बाँग निमाज़ में ठाढ़े दरशन जहाँ खोदाई ॥ २ ॥
हवा न हिर्स खुदी नहिं खूबी अनल हक्क़ जहँ बानी ।
बे चिराग़ रोशन सब ख़ाने तिस में तख्त सुभानी ॥ ३ ॥
नहर बिना जहँ कँवल फूलाने अबर बिना जहँ बरसै ।
बेशऊर तंबूर सब बाजे चश्मा हो मन दरसै ॥ ४ ॥

---

(१) कोई एक, कोई कोई ।

जिस दरगाह मुसल्ला बैठा डारै चादर क़ाज़ी ।
चाय करै चीनी को बूझै सब को राखै राज़ी ॥ ५ ॥
ऐसा हो जब कामिल कहिये जब कमाल पद पावै ।
साहब मिल साहब हो दरसै ज्यौं जल बुन्द समावै ॥ ६ ॥
जा केवल दीदार किये से नादिर होय फ़क़ीर ।
मारै काल क़लन्दर कर गहि दरद लिये धरि धीर ॥ ७ ॥
ऐसा हो जब पीर कहावै मान मनी सब खोवै ।
चरनदास वह ज़मीन रौशन पायँ पसारे सोवै ॥ ८ ॥

नाम निरूपन

॥ शब्द ४ राग रामकली ॥

सतगुर अच्छर मोहिं पढ़ायो ।
लेखनि[१] लिखा न स्याही सेती ।
ना वह कागद मध्य चढ़ायो ॥ १ ॥
ना लग मात्र न माथे बन्दी अरुन[२] पीत महिं काला ।
एँड़ा बेंड़ा टेढ़ा नाहीं ना वह आल जँजाला ॥ २ ॥
ता कूँ देख थको सब करनी सब ही साधन भागे ।
सिद्धें भईं भोर के तारे मुक्ति न दीखै आगे ॥ ३ ॥
जा के पढ़े पढ़न सब छूटे आसा पोथा फारी ।
मैं तौ भया करम का हीना कहै सरसुती ठाढ़ी ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव पढ़ायो अच्छर अगम देस चटसाला[३] ।
चरनदास जब पंडित हूए धारि तिलक अरु माला ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ राग धनाश्री ॥

अब मैं सतगुरु सरनै आयो ॥ टेक ॥
बिन रसना बिन अच्छर बानी ऐसो हि जाप सुनायो ॥ १ ॥
काम क्रोध मद पाप जराये त्रैबिधि पाप नसायो ॥ २ ॥
नागिन पाँच मुईं संग ममता दृष्टि सूँ काल डेरायो ॥ ३ ॥

---

(१) क़लम । (२) लाल । (३) पाठशाला, मकतब ।

किरिया कर्म अचार भुलाना ना तीरथ मग धायो ॥ ४ ॥
समझो सहज बचन सुनि गुरु के भर्म को बोझ बगायो[1] ॥ ५ ॥
ज्यों ज्यों जमौं[2] गरक[3] हों वामें वह मो माहिं समायो ॥ ६ ॥
जग झूँठो झूँठो तन मेरो थों आपा नहिं पायो ॥ ७ ॥
वा कूँ जपै जन्म सोइ जीतै सो मैं सुद्ध बतायो ॥ ८ ॥
चरनदास सुकदेव दया थौं सागर लहरि समायो ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

गगन मंडल में जाप कर, जित है दसवाँ द्वार ।
चरनदास यों कहत हैं, सो पहुँचै हरि वार ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ राग भैरो ॥

गुरु बिन मेरे और न कोय, जग के नाते सब दिये खोय ॥१॥
गुरु ही मात पिता अरु बीर, गुरु हो सम्पति जीव सरीर ॥२॥
गुरु ही जाति बरन कुल गोत, जहाँ तहाँ गुरु संगी होत ॥३॥
गुरु ही तीरथ बर्त हमार, दीन्हे और धरम सब डार ॥४॥
गुरु ही नाम जपौं दिन रैन, गुरु कूँ ध्यान परम सुख दैन ॥५॥
गुरु के चरन कमल कर बास, और न राखूँ कोई आस ॥६॥
जो कुछ चाहैं गुरु ही करैं, भावै छाँह धूप में धरैं ॥७॥
आदि पुरुष गुरु ही को जानूँ, गुरु ही मुक्ती रूप पिछानूँ ॥८॥
चरनदास के गुरु सुकदेव, और न दूजा लागै लेव[4] ॥९॥

॥ शब्द २ आरती राग भैरो ॥

मंगल आरति कीजै प्रात, सकल अबिद्या घट गइ रात ॥१॥
सूरज ज्ञान भयो उजियारा, मिटि गये औगुन कुबुधि बिकारा ॥२॥
मन के रोग सोग सब नासे, सुमति नीर सुभ जलज[5] प्रकासे ॥३॥
भय अरु भर्म नहीं ठहराई, दुबिधा गई एकता आई ॥४॥

---

(१) बगदाया, छिटकाया । (२) ध्यान लगाऊँ । (३) डूब जाऊँ । (४) लेवा, कोचड़ ।
(५) कमल ।

जाति बरन कुल सूझै नीके, सब संदेह गये अब जी के ॥५॥
घट घट दरसै दीन दयाला, रोम रोम सब हो गइ माला ॥६॥
दृष्टि न आवैं दुख जग जाला, काग पलटि गति भये मराला[1] ॥७॥
अनहद बाजे बाजन लागे, चोर नगरिया तजि तजि भागे ॥८॥
गुरु सुकदेव की फिरी दोहाई, चरनदास अंतर लौ लाई ॥९॥

॥ शब्द ३ राग सोरठ ॥

यों कहैं हरि जी दया निधान, संत हमारे जीवन प्रान ॥१॥
संत चलैं जहँ संग हिं जावँ, संत दियो सो भोजन खावँ ॥२॥
संत सुलावैं जित रहुँ सोय, संत बिना मेरे और न कोय ॥३॥
संत हमारे माई बाप, संतहि को मन राखूँ जाप ॥४॥
संत को ध्यान धरौं दिन रैन, संत बिना मोहिं परै न चैन ॥५॥
संत हमारी देही जान, संतहिं को राखूँ पहिचान ॥६॥
संत की सकल बलैयाँ लेवँ, संत कूँ अपनो सर्वस देवँ ॥७॥
संतहि हेत धरूं औतार, रच्छा कारन करूँ न बार ॥८॥
सुख देऊँ सुख सब निर्वार, चरनदास मेरो परिवार ॥९॥

॥ शब्द ४ राग सोरठ ॥

वह पुरुषोत्तम मेरा यार, नेह लगी टूटै नहिं तार ॥१॥
तीरथ जाउँ न बर्त करूँ, चरन कमल को ध्यान धरूँ ॥२॥
प्रान पियारे मेरेहिं पास, बन बन माहिं न फिरूं उदास ॥३॥
पढ़ूँ न गाता बेद पुरान, एकहिं सुमिरूँ श्रीभगवान ॥४॥
औरन को नहिं नाऊँ सीस, हरि ही हरि हैं बिस्वे बीस ॥५॥
काहू की नहिं राखूँ आस, तृस्ना काटि दई है फाँस ॥६॥
उद्यम करूं न राखूँ दाम, सहजहिं ह्वै रहैं पूरन काम ॥७॥
सिद्धि मुक्ति फल चाहौं नाहिं, नितहिं रहूँ हरि संतन माहिं ॥८॥
गुरु सुकदेव यही मोहिं दीन, चरनदास आनंद लव लीन ॥९॥

---

(१) हंस।

॥ शब्द ५ राग केदारा ॥

अरे मन करो ऐसा जाप।
कटैं संकट कोटि तेरे मिटैं सगरे पाप ॥ १ ॥
चेत चेतन खोज करि लै देख आपा आप।
काग सूँ जब हंस होवै नाम के परताप ॥ २ ॥
ध्यान आतम सुरति राखौ छुटैं त्रगुन ताप।
सुरति माला सुमिरि हिरदय छाँड़ु सकल संताप ॥ ३ ॥
परा भक्ति अगाध अद्भुत बिमल अरु निष्काम।
चरनदास सुकदेव कहिया बसै निज पुर धाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ राग बिलावल ॥

अब तू सुमिरन कर मन मेरे।
अगले पिछले अब के कीये पाप कटैं सब तेरे ॥ १ ॥
जम के दंड दहन पावक की चौरासी दुख घेरे।
भर्म कर्म सबहीं कटि जैहैं जक्त ब्याधि उरझेरे ॥ २ ॥
पैहै भक्ति मुक्ति गति आनंद अमरहिं लोक बसेरो।
जनमै मरै न जोनी आवै या जग करै न फेरो ॥ ३ ॥
सुमिरन साधन माहिं सिरोमनि जो सुमिरन करि जानै।
काम क्रोध मद पाप जरावै हरि बिन और न मानै ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव बताय दियो है बिन जिभ्या करि लीजै।
चरनदास कहैं घेरि घेरि कर अर्ध उर्ध मन दीजै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ राग नट व बिलावल ॥

जो नर हरि धन सूँ चित लावै।
जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवाया पावै ॥ १ ॥
मन करि कोठी नावँ खजानो भक्ति दुकान लगावै।
पूरा सतगुरु साझी करिकै संगति बानेज चलावै ॥ २ ॥
हुंडी ध्यान सुरति ले पहुँचे प्रेम नगर के माहीं।
सीधा साहूकारा साँचा हेर फेर कछु नाहीं ॥ ३ ॥

जित सौदागर सबही सुखिया गुरु सुकदेव बसाये।
चरनहिंदास बिलमि रहे ह्वाँई जूनो[1] पंथ न आये॥ ४॥

॥ शब्द ८ राग बिहागरा॥

भइ हूँ प्रेम में चूर हो मोहिं दरसन दीजे।
हूँ तो दासी तिहारी मोहन बेगि खबरिया लीजे॥ १॥
ज्ञान ध्यान अरु सुमिरन तेरो तुव चरनन चित राखूँ।
तेरोहि नाम जपूँ दिन राती तुव बिन और न भाखूँ॥ २॥
तन ब्याकुल जिय रूँधोहि आवत परी प्रीत गल फाँसी।
तुम तो निठुर कठोर महा पिय तुमको आवै हाँसी॥ ३॥
बिरह अगिन नख सिख सूँ लागी मनै कल्पना भारी।
गिरोहि[2] प्रीत तन संभ्रम[3] नाहीं रहत भवन में डारी॥ ४॥
की विष खाय तजों यह काया की तुम्हरे संग रहसूँ।
चरनदास सुकदेव बिछोहा तेरी सौं[4] नहिं सहसूँ[5]॥ ५॥

॥ शब्द ९ राग मंगल॥

परम सखी सोइ साध जो आपा ना थपै।
मन के दोष मिटाय नाम निर्गुन जपै॥ १॥
पर निन्दा पर नारि द्रव्य नाहीं हरै।
जिन चालन हरि दूर बीच अंतर परै॥ २॥
छिन नहिं बिसरै राम ताहि निकटै तकै।
हरि चरचा बिन और बाद नाहीं बकै॥ ३॥
झूँठ कपट छल भगल ये सकल निवारिये।
जत सत सील संतोष छिमा हिय धारिये॥ ४॥
काम क्रोध मद लोभ बिडारन कीजिये।
मोह ममता अभिमान अकस तजि दीजिये॥ ५॥

(१) पुनर्जन्म। (२) ग्रसी। (३) सम्हाल। (४) क़सम। (५) सह सकता हूँ।

सब जीवन निर्बैर त्याग बैराग लै।
तब निर्भय ह्वै संत भाँति काहू न भै[१] ॥ ६ ॥
काग करम सब छोंड़ि होय हंसा गती।
तृस्ना आस जलाय सोई साधू मती ॥ ७ ॥
जग सूँ रहै उदास भोग चित ना धरै।
जब रीझै करतार दास अपनो करै ॥ ८ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जो ऐसा हूजिये।
चरनहिं दास बिचारि प्रेम में भीजिये ॥ ९ ॥

॥ शब्द १० राग हिंडोला ॥

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने ॥ टेक ॥
पौन उमाह उछाह धरती सोत्र सावन मास।
लाज के जहँ उड़त बगुले मोर हैं जग हाँस ॥ १ ॥
हरष सोक दोउ खंभ रोपे सुरत डोरी लाय।
बिरह पटरी बैठि सजनी उमँग आवे जाय ॥ २ ॥
सकल बिकल तहँ देत झोंके बिपत गावन हार।
सखी बहुतक रंग राती रँगी पाँचो नार ॥ ३ ॥
नैन बादल उमंगि बरसैं दामिनी दमकात।
बुद्धि को ठहराव नाहीं नेह की नहिं जात ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं कोइ बली झूलै सीस देत अकोर[२]।
चरनदासा भये बौरे जाति बरन कुल छोर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ राग बिलावल ॥

साँचा सुमिरन कीजिये जा में मीन न मेख।
ज्यों आगे साधुन कियो बानी में देख ॥ १ ॥
टेक गहो दृढ़ भक्ति को नौधा हिय धारि।
संतन की सेवा करो कुल कानि निवारि ॥ २ ॥

---

(१) भय। (२) भेट, घूस।

जा सूँ प्रेमा ऊपजै जब हरि दरसायँ ।
आगे पीछे ही फिरैं प्रभु छोड़ि न जायँ ॥ ३ ॥
चारि मुक्ति बाँदी भवै सिधि चरनन माहिं ।
तीरथ सब आसा करैं अघ देख नसाहिं ॥ ४ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जो चरनदास गुलाम ।
ऐसी साधन धारिये रहिये निस्काम ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ राग धनाश्री ॥

गुरु गम यहि बिधि जोग कमायो ।
आसन अचल मेर कियो सोधो कसि बंध मूल लगायो ॥ १ ॥
संजम साधि कला बस कीन्ही मन पवना घर आयो ।
नौ दरवाजे पट दै राखे अर्धै उर्ध मिलायो ॥ २ ॥
नाभि तले पैड़ो करि पैठे सक्ति पताल गई है ।
काँप्यौ सेस कमठ अकुलायो सायर थाह दई है ॥ ३ ॥
उलटि चले मठ फोरि इकीसो गये अभय पद माहीं ।
अति उँजियारो अद्भुत लीला कहन सुनन गम नाहीं ॥ ४ ॥
जित भये लीन सब सुधि बिसरी छुटी जगत की ब्याधा ।
चरनदास सुकदेव दया सूँ लागी सुन्न समाधा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ राग धनाश्री ॥

ऐसी जोग जुक्ति गति भारी ।
मूलहिँ बंध लगाय जुक्ति सूँ मूँदि दई नव नारी ॥ १ ॥
आसन पद्म महा दृढ़ कीन्हो हिरदय चिबुक[1] लगाई ।
चन्द सूर दोउ सम करि राखे निरति सुरति घर आई ॥ २ ॥
ऊपर खैंचि अपान सहज में सहजै प्रान मिलाई ।
पवन फिरी पच्छिम कूँ दौरी मेरुहि मेरु चलाई ॥ ३ ॥
ऐसहिं लोक अमर पद पहुँचे सूरज कोटि उजारी ।
सेत सिंहासन सतगुरु परसे करि दरसन बलिहारी ॥ ४ ॥

(१) ठुड्डी ।

आपा बिसरि प्रेम सुख पायो उनमुन लागी तारो ।
चरनदास सुकदेव दया सूँ चरन दास छुटी बारी[1] ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ राग मलार ॥

बिथा मोरी जानत हो अकि[2] नाहीं ।
नख सिख पावक बिरह लगाई बिछुरन दुख मन माहीं ॥ १ ॥
दिन नहिं चैन नींद नहिं निसकूँ निस्चल बुधि नहिं मेरी ।
कासूँ कहूँ कोउ हितु न हमारो लग्न लहरि हरि तेरी ॥ २ ॥
तन भयो छीन दीन भये नैना अजहूँ सुधि नहिं पाई ।
छतियाँ दरकत करक हिये में प्रीत महा दुखदाई ॥ ३ ॥
जल बिन मीन पिया बिन बिरहिन इन धीरज कहु कैसी ।
पच्छी जरै दव[3] लागी बन में मेरी गति भइ ऐसी ॥ ४ ॥
तलफत हूँ जिय निकसत नाहीं तन में अति अकुलाई ।
चरनदास सुकदेवहिं बिनवै[4] दरसन द्यो सुखदाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ राग सीठना ॥

पर आसा है दुखदाई ॥ टेक ॥
जिन धीरज सो पति रसिया छाँड़ो ।
बाँको मोह यार कियो गाढ़ो, क्रोध सूँ प्रीति लगाई ॥ १ ॥
जिन जत सत देवर सूँ मुख मोड़ा ।
दया बहिन सूँ नाता तोड़ा, सुमति सौच[5] बिसराई ॥ २ ॥
जो धर्म पिता के घर सूँ छूटी ।
छिमा माय सूँ यों हीं रूठी, कुमति परोसिन पाई ॥ ३ ॥
संतोष चचा को कहा न माना ।
चची दीनता सूँ रिसि ठाना, माया मद बौराई ॥ ४ ॥
चरनदास जब निज पति पावै ।
श्री सुकदेव सरन सो आवै, सील सिंगार बनाई ॥ ५ ॥

(१) चरन के दास का आवागवन छूटा । (२) याकि । (३) आग । (४) बिनती करता है । (५) सफाई ।

॥ शब्द १६ राग बिलावल ॥

करनी की गति और है कथनी की औरे।
बिन करनी कथनी कथैं बक बादी बौरे ॥ १ ॥
करनी बिन कथनी इसी[1] ज्यों ससि बिन रजनी।
बिन सस्तर[2] ज्यों सूरमा भूषन बिन सजनी[3] ॥ २ ॥
ज्यों पंडित कथि कथि भले बैराग सुनावै।
आप कुटुंब के फँद पड़े नाहीं सुरझावैं ॥ ३ ॥
बाँझ झुलावै पालना बालक नहिं माहीं।
बस्तु बिहीना जानिये जहँ करनी नाहीं ॥ ४ ॥
बहु डिंभी करनी बिना कथि कथि करि मूए।
संतों कथि करनी करि हरि के सम हूए ॥ ५ ॥
कहैं गुरु सुकदेव जी चरनदास बिचारौ।
करनी रहनी दृढ़ गहौ थोथी कथनी डारौ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १७ राग बिलावल ॥

माला फेरे कहा भयो ॥ टेक ॥
अंतर के मन को नहिं फेरा पाप करत सब जन्म गयो ॥१॥
पर निन्दा पर नारि न भूलो खोट कपट की ओर नयो ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ न खोये ह्वै रह्यो मूरख मोह मयो ॥३॥
दुनियाँ साँच समझ घर कीन्हो धन जोरन को परन लयो ॥४॥
दया धर्म दोउ मारग छाँड़े मँगतन को नहिं दान दयो ॥५॥
गुरु सूँ झूँठ भगल साधन सूँ हरि सूँ नाहीं नेह जयो[5] ॥६॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं कैसे कहियो मुक्ति हयो[6] ॥७॥

॥ शब्द १८ राग सोरठ ॥

अवधू ऐसी मदिरा पीजै।
बैठि गुफा में यह जग बिसरै चंद सूर सम कीजै ॥ १ ॥

---

(१) ऐसी। (२) हथियार। (३) स्त्री। (४) झुका। (५) जाना। (६) होगी।

जहाँ कुलाल चढ़ाई भाठी ब्रह्म ज्वाल परजारी।
भरि भरि प्याला देत कुलाली बाढ़ै भक्ति खुमारी ॥ २ ॥
माता[1] है करि ज्ञान खड़ग लै काम क्रोध कूँ मारै।
घूमत रहै गहै मन चंचल दुबिधा सकल बिडारै ॥ ३ ॥
जो चाखै यह प्रेम सुधारस निज पुर पहुँचै सोई।
अमर होय अमरा पद पावै आवा गवन न होई ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव किया मतवारा तीन लोक तृन बूझा।
चरनदास रनजीत भये जब आनंद आनंद सूझा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १९ राग बिहागरा ॥

साधो निंदक मित्र हमारा।
निंदक कूँ निकटे ही राखौं होन न देउँ नियारा ॥ १ ॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै सुनि मन मिटै बिकारा।
जैसे सोना तापि अगिन में निरमल करै सोनारा ॥ २ ॥
घन अहरन कसि[2] हीरा निबटै[3] कीमत लच्छ हजारा।
ऐसे जाँचत दुष्ट संत कूँ करन जगत उजियारा ॥ ३ ॥
जोग जज्ञ जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा।
बिन करनी मम कर्म कठिन सब मेटै निंदक प्यारा ॥ ४ ॥
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा।
हमरी निंदा करने वाला उतरै भव निधि पारा ॥ ५ ॥
निंदक के चरनों की अस्तुति भाखौं बारम्बारा।
चरनदास कहैं सुनियो साधो निंदक साधक भारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० राग सोरठ ॥

साधो होनहार की बात।
होत सोई जो होनहार है का पै मेटी जात ॥ १ ॥
कोटि सयानप बहु बिधि कीन्हे बहुत तके कुसिलात।
होनहार ने उलटी कीन्ही जल में आग लगात ॥ २ ॥

---

(१) मस्त। (२) पीट करके। (३) निर्मल होय।

जो कुछ होय होतबता[1] भोंड़ी जैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हिरदै मुख बोलै बिसरि जाय सब सुद्धि ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया सूँ होनी धारि लई मन माहिं।
चरनदास सोचे दुख उपजै समझे सूँ दुख जाहिं ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ राग परज ॥

जिन्हैं हरि भक्ति पियारी हो।
मात पिता सहजै छुटैं छुटैं सुत अरु नारी हो ॥ १ ॥
लोक भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारी हो।
हानि लाभ नहिं चाहिए सब आसा हारी हो ॥ २ ॥
जग सूँ मुख मोरे रहै करैं ध्यान मुरारी हो।
जित मनुवाँ लागो रहै भइ घट उँजियारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव बताइया प्रेमी गति भारी हो।
चरनदास चारो बेद सूँ औरै कछु न्यारी हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ राग परज ॥

गुरु हमरे प्रेम पियायो हो।
ता दिन तें पलटो भयो कुल गोत नसायो हो ॥ १ ॥
अमल चढ़ो गगने लगो अनहद मन छायो हो।
तेज़ पुंज की सेज पै प्रीतम गल लायो हो ॥ २ ॥
गये दिवाने देसड़े आनंद दरसायो हो।
सब किरिया सहजे छुटी तप नेम भुलायो हो ॥ ३ ॥
त्रैगुन तैं ऊपर रहूँ सुकदेव बसायो हो।
चरनदास दिन रैन नहिं तुरिया पद पायो हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ राग सोरठ ॥

भाई रे समझ जग ब्यवहार।
जब ताईं तेरे धन पराक्रम करैं सबहीं प्यार ॥ १ ॥

---

(१) होनहार।

अपने सुख कूँ सबहिं चाहैं मित्र सुत अरु नार।
इन्हीं तो अप[1] बस कियो है मोह बेड़ी डारि ॥ २ ॥
सबन तो कूँ भय दिखायो लाज लकुटी[2] मार।
बाजीगर के बाँदरा ज्यों फिरत घर घर द्वार ॥ ३ ॥
जबै तो कूँ बिपति आवै जरा कोर बिकार।
तबै तो सूँ लाज मानैं करै ना तेरि सार ॥ ४ ॥
इनकी संगति सदा दुख है समझ मूढ़ गँवार।
हरि प्रीतम कूँ सुमिरि ले कहैं चरनदास पुकार ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ राग बिहागरा ॥

ये सब निज स्वारथ के गरजी।
जग में हेत न कर काहू सूँ अपने मन को बरजी[3] ॥ १ ॥
रोपैं फंद घात बहु डारैं इन तें रहु डरता जी।
हिरदे कपट बाहर मिठ बोलैं यह छल हैगो कहा जी ॥ २ ॥
दुख सुख दर्द दया नहिं बूझैं इनसे छुटावो हरि जी।
सौगंद खाय झूँठ बहु बोलैं भौसागर कस तरि जी ॥ ३ ॥
बैरी मित्र सबै चुनि देखे दिल के महरम[4] कहँ जी।
इन को दोष कहा कहा दीजे यह कलजुग की झर जी ॥ ४ ॥
दुनिया भगल कुटिल बहु खोंटी देखि छाती मेरी लरजी[5]।
चरनदास इन कूँ तजि दीजै चल बस अपने घर जी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ राग आसावरी ॥

साधो राम भजे ते सुखिया।
राजा परजा नेमी दाता सबहीं देखे दुखिया ॥ १ ॥
जो कोई धनवन्त जगत में राखत लाख हजारा।
उनकूँ तो संसय है निस दिन घटत बढ़त ब्यौहारा ॥ २ ॥
जिनके बहु सुत नाती कहिये और कुटुंब परिवारा।
वे तो जीवन मरन के काजे भरत रहैं दुख भारा ॥ ३ ॥

---

(१) अपने। (२) लाठी। (३) मना करना। (४) भेदी। (५) काँपी।

नेमी नेम करत दुख पावै कर असनान सवेरा ।
दाता कूँ देबे का दुख है जब मँगतौं ने घेरा ॥ ४ ॥
चारि बरन में कोउ न देखो जाकूँ चिन्ता नाहीं ।
हरि की भक्ति बिना सब दुख है समझ देख मन माहीं ॥ ५ ॥
सत संगति अरु हरि सुमिरन करि सुकदेवा गुरु कहिया ।
चरनदास बिपता सब तजि के आनँद में नित रहिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द २६ राग सोरठ ॥

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ टेक ॥
लखो अचानक अज[1] अबिनासी उघरि गये दृग तारा ॥ १ ॥
झूमि रह्यो मेरे आँगन में टरत नहीं कहुँ टारा ॥ २ ॥
रोम रोम हिय माहीं देखो होत नहीं छिन न्यारा ॥ ३ ॥
भयो अचरज चरनदास न पैये खोज कियो बहु बारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २७ राग आसावरी ॥

हे मन आतम पूजा कीजै ।
जितनी पूजा जग के माहीं सबहुन को फल लीजै ॥ १ ॥
जो जो देहीं ठाकुरद्वारे तिन में आप बिराजै ।
देवल में देवत है परगट आछी बिधि सूँ राजै ॥ २ ॥
त्रैगुन भवन सँभारि पूजिये अनरस होन न पावै ।
जैसे कूँ तैसा ही परसौ प्रेम अधिक उपजावै ॥ ३ ॥
और देवता दृष्टि न आवै धोखे कूँ सिर नावै ।
आदि सनातन रूप सदा हों मूरख ताहि न ध्यावै ॥ ४ ॥
घट घट सूझै कोइ इक बूझै गुरु सुकदेव बतावैं ।
चरनदास यह सेवन कीन्हे जिवन मुक्ति फल पावैं ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ राग हेली ॥

समझि सँभारो रामजो हेली और न मीता कोय ।
जीवत की रच्छा करैं मुए मुक्ति करैं तोय ॥ १ ॥

(१) अजर ।

अरु सब स्वारथ के सगे री हेली अंत न कोई साथ।
सुख में सब ही रल मिलें दुख में सुनें न बात ॥ २ ॥
छल करि मन की बूझ लें री हेली पाछे डारैं घात।
तिन कूँ तू अपनो कहै सो दोषी है जात ॥ ३ ॥
भेद न अपनो दीजिये री हेली कोऊ कैसो होय।
दयहिर की हिरदय रहै हरि ही जानै सोय ॥ ४ ॥
कै गुरु अपनो जानिये री हेली कै सत संगति बास।
गुरु सुकदेव बतावई देख चरन हीं दास ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ राग बिलावल ॥

अरे नर जन्म पदारथ खोया रे ॥ टेक ॥
बीती अवधि काल जब आया सीस पकरि कै रोया रे ॥ १ ॥
अब क्या होय कहा बनि आवै माहिं अविद्या सोया रे ॥ २ ॥
साधु संग गुरु सेवन चीन्ही तत्व ज्ञान नहिं जोया[1] रे ॥ ३ ॥
आगे से हरि भक्ति न कीन्हो रसना राम न जोया रे ॥ ४ ॥
चौरासी जम दंड न छूटै आवा गवन का दोया[2] रे ॥ ५ ॥
जो कुछ किया सोई अब पावो वहीलनौ[3] जो बोया रे ॥ ६ ॥
साहब साँचा न्याव चुकावै ज्यों का त्यों ही होया रे ॥ ७ ॥
कहूँ पुकारे सब सुनि लीजो चेति जाव नर लोया रे ॥ ८ ॥
कहैं सुकदेव चरन हीं दासा यह मैदान यह गोया[4] रे ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३० राग आसावरी ॥

जब सूँ मन चंचल घर आया।
निर्मल भया मैल गये सगरे तीरथ ध्यान जो न्हाया ॥ १ ॥
निर्बासी है आनंद पाये या जग सूँ मुख मोड़ा।
पाँचो भई सहज बस मेरे जब इनका रस छोड़ा ॥ २ ॥
भय सब छूटे अब को लूटै दूजी आस न कोई।
सिमिटि सिमिटि रहा अपने माहीं सकल बिकल नहिं होई ॥ ३ ॥

---

(१) ढूँढ़ा। (२) दौड़ारी, डोरा। (३) काटो। (४) गेंद।

निज मन हूआ मिटि गा दूआ को बैरी को मीता।
बंध मुक्ति का संसय नाहीं जन्म मरन की चीता[1] ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव भेव मोहिं दीनो जब सूँ यह गति साधी।
चरनदास सूँ ठाकुर हूए बुटि[2] गये बाद बिबादी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३१ रागबिहागरा व बिलावल ॥

अब हम ज्ञान गुरू से पाया।
दुबिधा खोय एकता दरसी निस्चल ह्वै घर आया ॥ १ ॥
हिरदा सुद्ध हुआ बुधि निर्मल चाह रही नहिं कोई।
ना कुछ सुनूँ न परसूँ बूझूँ उलटि पलटि सब खोई ॥ २ ॥
समझ भई जब आनंद पाये आतम आतम सूझा।
सूधा भया सकल मन मेरा नेक न कहूँ अरूझा ॥ ३ ॥
मैं सबहुन में सब मोहूँ में साँच यही करि जाना।
यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना ॥ ४ ॥
सुकदेवा ने सब सुख दीन्हे तिरपत होय अघायो।
चरनदास निकसा नहिं रंचक परमातम दरसायो[3] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३२ राग मंगल व बिलावल ॥

कर्म करि निष्कर्म होवै, फेरि कर्म न कीजिये।
भूलि कै कोइ कर्म साधै, उलटि कर्म न दीजिये ॥ १ ॥
कर्म त्यागै जगै आतम, यह निस्चय करि जानिये।
जब अभय पद सुलभ पावै, साँच हिय में आनिये ॥ २ ॥
साँच हिय में राखि अवधू, नाम निर्गुन नित जपौ।
अगिन इन्द्री कर्म लकड़ी, पंच अग्नी अस तपौ ॥ ३ ॥
जैसे टूट गहनो खोज मेटै, होय सोना अति सुखी।
ऐसे जोग भक्ति बराग सेती, कर्म काटै गुरुमुखी ॥ ४ ॥
जासूँ मिटै आपा आप सहजै, ब्रह्म बिद्या ठानिये।
गुरु सुकदेवा जुक्ति भाखैं, चरनदास पिछानिये ॥ ५ ॥

---

(१) चिन्ता। (२) लुट गये। (३) चरनदास का आपा नहीं रहा बरन परमात्मा में अभेद हो गया।

॥ शब्द ३३ राग असावरी ॥

हम तो आतम पूजा धारी।
समझि समझि कर निस्चय कीन्ही, और सबन पर भारी ॥ १ ॥
और देवल जहँ धुँधलो पूजा, देवत दृष्टि न आवै।
हमरा देवत परगट दीखै, बोलै चालै खावै ॥ २ ॥
जित देखौं तित ठाकुरद्वारे, करों जहाँ नित सेवा।
पूजा की बिधि नीके जानौं, जासूँ परसन देवा ॥ ३ ॥
करि सन्मान अस्नान कराऊँ, चन्दन नेह लगाऊँ।
मीठे बचन पुष्प सोइ जानो, ह्वै करि दीन चढ़ाऊँ ॥ ४ ॥
परसन करि करि दरसन पाऊँ, बार बार बलि जाऊँ।
चरनदास सुकदेव बतावैं, आठ पहर सुख पाऊँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ राग सीठना ॥

तेरी छिन छिन छीजत आयु, समझ अजहूँ भाई ॥ १ ॥
दिन दो का जीवन जानि, छाँड़ दे गुमराई[1] ॥ २ ॥
सुन मूरख नर अज्ञान, चेत करु कोउ न रहो ॥ ३ ॥
कह फूला फिरत गँवार, जगत झूँठे माहीं ॥ ४ ॥
कियौ काम क्रोध सूँ नेह, गही है अकड़ाई ॥ ५ ॥
मतवारा माया माहिं, करत है कुटिलाई ॥ ६ ॥
तेरो संगी कोई नाहिं, गहै जब जम बाहीं ॥ ७ ॥
सुकदेव चितावैं तोहिं, त्याग रे मचलाई ॥ ८ ॥
चरनदास कहैं भजु राम, यही है सुखदाई ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३५ सवैया ॥

आदिहुँ आनंद, अन्तहुँ आनंद, मध्यहुँ आनंद, ऐसे हिं जानौ।
बंधहुँ आनंद, मुक्तिहुँ आनंद, आनंद ज्ञान, अज्ञान पिछानौ ॥
लेटहुँ आनंद, बैठहुँ आनंद, डोलत आनंद, आनंद आनौ।
चरनदास बिचारि, सबै कुछ आनंद, आनंद छाँड़ि कै, दुक्ख न ठानौ ॥

---

(१) गुमराही, भूल, भटक।

॥ शब्द ३६ कबित्त ॥

मंदिर क्यों त्यागै अरु भागै क्यों गिरिवर कूँ,
हरि जी कूँ दूर जानि कल्पै क्यों बावरे।
सब साधन बतायो अरु चारि बेद गायो,
आपन कूँ आप देखि अन्दर लौ लाव रे॥
ब्रह्म ज्ञान हिये धरौ बोलते को खोज करौ,
माया अज्ञान हरौ, आपा बिसराव रे।
जैहैं जब आप धाप कहा पुन्न कहा पाप,
कहैं चरनदास तू निस्चल घर आव रे॥

॥ शब्द ३७ भोर की धुन राग भैरव ॥

आरति रमता राम की कीजै, अंतर्ध्यान निरखि सुख लीजै।
चेतन चौकी सत कूँ आसन, मगन रूप तकिया धरि दीजै॥
सोहं थाल खैंचि मन धरिया, सुरत निरत दोउ बाती बरिया।
जोग जुगति सूँ आरति साजी, अनहद घंट आप सूँ बाजी॥
सुमति साँझ की बेरिया आई, पाँच पचीस मिलि आरति गाई।
चरनदास सुकदेव कूँ चेरो, घट घट दरसै साहब मेरो॥

॥ शब्द ३८ भोर की धुन राग भैरव ॥

गगन मंडल में आरति कीजै, उत्तम साज सकल साजि लीजै।
सुखमन अमृत कुंभ[1] धरावै, मनसा मालिनि फूल चढ़ावै॥
घीव अखंडा सोहं बाती, त्रिकुटी ज्योति जलै दिन राती।
पवन साधना थाल करीजै, ता में चौमुख मन धर लीजै॥
रबि ससि हाथ गहो तिहि माहीं, खिन दहिने खिन बाँये लाई।
सहस कँवल सिंहासन राजै, अनहद झाँझरि नित हीं बाजै॥
यहि बिधि आरति साँची सेवा, परम पुरुष देवन को देवा।
चरनदास सुकदेव बतावै, ऐसी आरति पार लगावै॥

---

(१) घड़ा।

॥ शब्द ३६ राग काफी ॥

कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान।
कहर गरूरी छाँड़ि दिवाने, तजो अकस की बान ॥ १ ॥
चुगली चोरी अरु निन्दा लै, झूठ कपट अरु कान।
इनकूँ डारि[1] गहे जत सत कूँ, सोई अधिक सयान ॥ २ ॥
हरि हरि सुमिरौ छिन नहिं बिसरौ, गुरु सेवा मन ठानि।
साधुन की संगति कर निस दिन, आवे ना कछु हानि ॥ ३ ॥
मुड़ौ कुमारग चलौ सुमारग, पावौ निज पुर बास।
गुरु सुकदेव चेतावैं तोकूँ, समुझ चरनहीं दास ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४० राग रामकली ॥

फिरि फिरि मूरख जन्म गँवायो।
हरि की भक्ति साधु की संगति, गुरु के चरनन में नहिं आयो ॥१॥
धन के जोरन को दृढ़ कीन्हो, महल करन ब्रत धारो।
टेक पकड़ करि नारी सेई, सिर पर बोझ लियो अति भारो ॥२॥
ह्वै हैं दुख नाना बिधि केरो, तन मन रोग बढ़ायो।
जीवत मरत नहीं सुख पैहो, आवा गवन कूँ बीज जगायो ॥३॥
भरमि भरमि चौरासी आयो, मनुषा देही पाई।
या तन की कछु सार न जानी, फिर आगे चौरासी आई ॥४॥
आँख उघारि समुझ मन माहीं, हिरदय करौ बिचारा।
ऐसा जन्म बहुरि कब पैहो, बिरथा खोवौ जग ब्योहारा ॥५॥
जानौगे जग छाँड़ि चलौगे, कोई न संग तुम्हारे।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, याद करौगे बचन हमारे ॥६॥

॥ शब्द ४१ राग कान्हरा ॥

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता।
कुटुंब संघाती स्वारथ लागे, तेरी काहू कूँ नहिं चीता ॥१॥

---

(१) फेक कर।

तैं प्रभु ओरी सूँ मुख मोड़ा, झूँठे लोगन सूँ हित कीता ।
अरु तैं अपनी आँखों देखा, कई बार दुख सुख हो बीता ॥२॥
सम्पति में सबहीं घिरि आवैं, बिपति परे अधिको दुख दीता ।
मूठी बाँधि जनम नर लायो, हाथ पसारि चलैगो रीता ॥३॥
धरि धरि स्वाँग फिरै तिन कारन, कपि ज्यौं नाचत ताता थीता ।
मुए न संगी होहिं तिहारे, बाँधि जलावैं देह पलीता ॥४॥
गुरु सेवा सतसंग न कीन्हीं, कनक कामिनी सों करि प्रीता ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, मरत मरत हरि नाम न लीता ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४२ राग सोरठ ॥

कछु मन तुम सुधि राखौ वा दिन की ।
जा दिन तेरी देह छुटैगी, ठौर बसौगे बन की ॥ १ ॥
जिन के संग बहुत सुख कीन्हे, मुख ढकि ह्वै हैं न्यारे ।
जम को त्रास होय बहु भाँती, कौन छुटावनहारे ॥ २ ॥
देहरी लौं तेरी नारि चलैगी, बड़ी पौरि लौं माई ।
मरघट लौं सब बीर भतीजे, हंस अकेलो जाई ॥ ३ ॥
द्रव्य गड़े अरु महल खड़े ही, पूत रहैं घर माहीं ।
जिन के काज पचे दिन राती, सो संग चालत नाहीं ॥ ४ ॥
देव पितर तेरे काम न आवैं, जिन की सेवा लावै ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, हरि बिन मुक्ति न पावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ राग हेली ॥

जग को आवन जान, हेली या को सोक न कीजे ।
यह संसार असार है, हेली हरि सूँ करि पहिचान ॥ १ ॥
कुटंब संग आया नहीं, हेली ना कोइ संग को जाय ।
ह्याँई मिलैं हियाँई बीछुरैं, ता को झुरै बलाय ॥ २ ॥
महल द्रव्य किस काम के, हेली चलैं न काहू साथ ।
राम तजे इन सों पगे, हारो अपने हाथ ॥ ३ ॥

जीवत काया धोवते, हेली तेल फुलेल लगाय।
मजलिस करि के बैठते, मूए काग न खाय॥ ४॥
ला भये हरषै नहीं, हेली हानि भये दुख नाहिं।
ज्ञानी जन वहि जानिये, सब पुरुसन के माहिं॥ ५॥
गुरु सुकदेव चितावई, हेली चरनदास हिय राखि।
मनुष जन्म दुर्लभ मिले, बेद कहत हैं साखि॥ ६॥

॥ शब्द ४४ राग हेली ॥

हरि पाये फल देख, हेली पावत ही खोई गई।
जात अटक कुल खोय गये, हेली खोये बरन अरु भेस॥ टेक॥
जन्म मरन सब खो गये, हेली बंध मुक्ति गये खोय।
ज्ञान अज्ञान न पाइये, नेम धर्म नहिं होय॥ १॥
लाज गई अरु भय गये, हेली साथहिं गई उपाध।
आसा अरु करनी गई, खोये बाद बिबाद॥ २॥
मैं नाही हरि हो रहे, तू दौरत हरि ओट।
पावैगी जब जानि है, हरि पावन की खोट[1]॥ ३॥
गुरु सुकदेव सुनाइया, हेली चरनदास मन सोच।
सब बातन सों जायगी, रहै न तेरो खोज॥ ४॥

॥ शब्द ४५ राग हेली ॥

अचरज अलख अपार, हेली वा की गति नहीं पाइये।
बहु निषेध जो पै करै, हेली तौ जावैगा हार॥ टेक॥
बानी थकि बुधि हूँ थकै, हेली अनुभय थकि थकि जाय।
ब्रह्मादिक सनकादि हूँ, नारद थकि गुन गाय॥ १॥
बेद थके अरु ब्यास हूँ, हेली ज्ञानी थके अरु ज्ञान।
संकर से जोगी थके, करि करि निर्मल ध्यान॥ २॥

---

(१) 'खोट' के मानी 'खराबी' के हैं—यह लफ़्ज़ ताना के तौर पर इस्तेमाल किया गया है यानी हरि जब मिलेंगे तब मज़ा मालूम होगा कि कुछ बाक़ी न रहैगा।

बहुतक कथि कथि हीं गये, हेली नेक न लिपटी बुद्ध ।
बाचक ज्ञानी कहत हैं, हमने पायो सुद्ध ॥ ३ ॥
पाँचो ईन्द्रिन सूँ लखै, हेली ताकूं साँचि न मानि ।
जो जो इन सूँ देखिये, तिनकी निस्चय हानि ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव सुनावई, हेली समझ चरन हीं दास ।
अपने ही परकास में, आप रहा परकास ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४६ राग काफी ॥

इन नैनन निराकार लहा ।
कहन सुनन की कौन पतीजै, जान अजान है सहज रहा ॥१॥
जित देखो तित अलष निरंजन, अमर अडोल अबोल महा ।
जोति जगत बिच झिलमिल झलकै, अगम अगोर पूरि रहा ॥२॥
अलख लखा जब बेगम हूआ, भर्म कोट जब तुर्त ढहा ।
सर्ब मई सब ऊपर राजै, सुन्न सरूपी ठोस ठहा ॥३॥
जीवन मुक्त भया मन मेरा, निर्भय निर्गुन ज्ञान महा ।
गुरु सुकदेव करी जब किरपा, चरनदास सुख सिंध बहा ॥४॥

॥ शब्द ४७ राग बिहागरा ॥

अरे नर हरि का हेत न जाना ।
उपजाया सुमिरन के काजे, तैं कछु औरै ठाना ॥ १ ॥
गर्भ माहिं जिन रच्छा कीन्ही, ह्वाँ खाने कूँ दीन्हा ।
जठर अगिन सों राखि लियो है, अँग संपूरन कीन्हा ॥ २ ॥
बाहर आय बहुत सुधि लीन्ही, दसन[1] बिना पय प्यायो ।
दाँत भये भोजन बहु भाँती, हित सों तोहिं खिलायो ॥ ३ ॥
और दिये सुख नाना बिधि के, समुझि देख मन माहीं ।
भूलो फिरत महा गर्बायो, तू कछु जानत नाहीं ॥ ४ ॥
तुव कारन सब कछु प्रभु कीन्हो, तू कीन्हा निज काजा ।
जग ब्यौहार पगो हीं बोलै, तोहिं न आवे लाजा ॥ ५ ॥

(१) दसन=दाँत ।

अजहूँ चेत उलट हरि सौंहीं[1], जन्म सुफल करु भाई ।
चरनदास सुकदेव कहैं यौं, सुमिरन है सुखदाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४८ राग सारंग ॥

दुनिया मगन भये धनधाम ।
लालच मोह कुटुँब के पागे, बिसरि गये हरि नाम ॥ १ ॥
एक घरी छुटकारो नाहीं, बँधि रहे आठो जाम ।
पाँच पहर धंधे में माते, तीन पहर सँग बाम[2] ॥ २ ॥
फूले फिरत महा गर्बाये, पवन भरे ये चाम ।
दीप कलस ज्यों बिनसि जायगो, या तन को यहि काम ॥ ३ ॥
साधु संग गुरु सेव न कीन्ही, सुमिरे ना श्री राम ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, कैसे पावो ठाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४९ राग काफी ॥

चला आवै चलावे[3] का द्योस[4], कछु करिले भाई ॥ टेक ॥
ह्याँ से चलना होय अचानक, फिर पाछे रहै अफसोस ॥ १ ॥
पी के बिषय मदिरा मतवारा, होय रहा बेहोस ॥ २ ॥
बाट में सूल बबूल घने, अरु जाना है कइ कोस ॥ ३ ॥
दम ही दम ही दम छीजत है, पल पल घटै तन जोस[5] ॥ ४ ॥
माया मोह कुटुँब सुख ऐसे, जैसे दीखै मोती ओस ॥ ५ ॥
सुकदेव दियो किरपा करि के, राम रस का प्याला नोस[6] ॥ ६ ॥
चरनदास कहैं यह बात भली, सुनि लीजै दोनों गोस[7] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ५० राग सोरठ व सारंग ॥

पाँचन मोहिं लियो बिलमा[8] ।
नासा तुचा और सरवनिया, नैनन अरु रसना ॥ १ ॥
एक एक ने बारी बाँधी, गहि गहि लै लै जाहिं ।
निस दिन उनहीं के रस पागो, घर में ठहरत नाहिं ॥ २ ॥

(१) ओर तरफ़ । (२) स्त्री । (३) चाला, कूच । (४) दिवस=दिन । (५) बल । (६) पी । (७) गोश=कान । (८) रिझाय लिया ।

अलि[1] पतंग गजमीन मृगा ज्यौं, ह्वै रह्यौ पर आधीन।
अपनो आप सँभारत नाहीं, बिषय बासना लीन॥ ३॥
ह्वै कुलवंती टोना सीखो, अनहद सुरति धरौं।
गगन मंगल में उलटा कूवाँ, तासों नीर भरौं॥ ४॥
भँवर गुफा में दीपक बारौं, मंतर एक पढ़ौं।
काम क्रोध मद लोभ होम करिलालन[2] चित्त हरौं॥ ५॥
जतन जतन करि पीव लुटाओं, फिर नहिं जानन दों।
चरनदास सुकदेव बतावैं, जिन मनहीं कर लों॥ ६॥

करनी

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

अरज करै कर जौरि कै, यह चरनन को दास।
ए हो श्री सुकदेव जी, कछु पूँछन की आस॥ १॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

पूँछो मन कूँ खोल करि, मेटौं सब संदेह।
अरु तुम्हरे हिरदय बिषै, सदा हमारो ग्रेह॥ २॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

मैं तौ चरनहिं दास हौं, तुम तौ परम दयाल।
एकन पग पनहीं नहीं, एक चढ़ैं सुख पाल॥ ३॥
यही जो मोहिं बताइये, एक मुक्ति को जाहिं।
एक नरक को जाय करि, मार जमों की खाहिं॥ ४॥
एक दुखी इक अति सुखी, एक भूप इक रंक।
एकन को बिद्या बड़ी, एक पढ़े नहिं अंक॥ ५॥

(१) भँवरा। (२) प्रीतम।

एकन को मेवा मिलै, एक चने भी नाहिं।
कारन कौन दिखाइये, करि चरनन की छाँहिं ॥ ६ ॥
यही मोहिं समझाइये, मन का धोखा जाय।
ह्वै करि निस्संदेह मैं, रहों चरन लिपटाय ॥ ७ ॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

जिन जैसी करनी करी, तैसे ही फल पाय।
भुगतत हैं वै जगत में, ता कूँ बदला पाय ॥ ८ ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

चरनदास यों कहत हैं, सुनो गुरू सुकदेव।
ज्यों करि होवहिं कर्म हूँ, ता कूँ कहिये भेव ॥ ९ ॥

गुरु बचन

॥ चौपाई ॥

कहि सुकदेव संदेह मिटाऊँ। ज्यो की त्यों पूरी समझाऊँ ॥
खोटी करनी नरकहिं जावै। पाप छीन मृत लोक हिं आवै ॥
भले कर्म जा स्वर्ग मँझारा। पुन्न छीन मृत लोक हिं डारा ॥
ऐसे लोक लोक फिरि आवै। कर्म न छूटै दुख सुख पावै ॥
जैसे कर्म छुटै सो कहूँ। तो पै दया करत हीं रहूँ ॥
खोटे कर्म सु सकल निवारै। सुभ करनी कूँ नीके धारै ॥
जा के फल कूँ मन नहिं लावै। ह्वै निष्कर्म परम सुख पावै ॥
फल त्यागै सोइ चरनहिं दासा। चरन कमल की राखै आसा।१०।

॥ दोहा ॥

सो पावै निर्बान पद, आवा गवन मिटाय।
जनम मरन होवै नहीं, फिरि फिरि काल न खाय ॥११॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

जो जो कहि गुरु देव जी, सो सो परी प्रतच्छ।
चरनदास कूँ दीजिये, साध होन की सिच्छ ॥१२॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

वही साधवी जानिये, निरवारै सब कर्म ।
तन मन बचन सधे रहैं, पालै अपना धर्म ॥१३॥
पहिले साधै बचन कूँ, दूजे साधै देह ।
तीजे मन कूँ साधिये, उर सूँ राखै नेह ॥१४॥
जिनहीं के उपदेस कूँ, राखै अपनो चित्त ।
ता कूँ मनन सदा करै, भूलै नहिं नित प्रित्त ॥१५॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

जो जो कही सो जानिया, ए हो श्री सुकदेव ।
साधन तन मन बचन कूँ, सब हीं कहिये भेव ॥१६॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

सिष्य सो तो सों कहत हौं, नीके सुन दै कान ।
ज्यों ज्यों कर्म बचं दसौ, ता की करि पहिचान ॥१७॥

बचन के कर्मों का निर्णय

॥ चौपाई ॥

प्रथम बचन के चार सुनाऊँ । तेरे चित में नीके लाऊँ ॥
एक यही जो झूठ न बोलै । साँच कहै तब हिरदय तोलै ॥
झूँठ कहन को पातक भारी । जो जप करै सो देहि उजारी ॥
झूँठे का जप लागत नाहीं । सिद्ध होय नहिं निस्फल जाहीं ॥
अरु झूँठे की नहिं परतीतैं । झूँठे की खोटी सब रीतैं ॥
दूजे निन्दा नाहीं करिये । पर के औगुन चित्त न धरिये ॥
निन्दा का भारी है पाप । या सूँ भी निस्फल है जाप ॥
तीजे कड़ुवा बचन न भाखै । सब जीवन सों हित हीं राखै ॥
खोटा बचन महा दुखदाई । जो साधै सो अति बलदाई ॥

खोटा बचन तपस्या खोवै। नरक माहिं लै जाय समोवै ॥
मीठे बचन बोलि सुख दीजै। उनके मन का सोक हरीजै ॥
कहै सुकदेवा चौथा सुनिये। चरनदास लै मन में गुनिये ॥१८॥

॥ दोहा ॥

चौथे मौन गहे रहै, लच्छन अधिक अमोल।
कर्म लगै जग बात सों, हरि चरचा में खोल ॥१९॥

तन के कर्मों का निर्णय

तन सों तीनि कर्म जो लागैं। सो मैं कहूँ तुम्हारे आगे ॥
चोरी जारी अरु हिंसा है। इन पापन सों भारी भय है ॥
कर्म छुटै जा की बिधि गाऊँ। भिन्न भिन्न तो कूँ समझाऊँ ॥
तन सों चोरी कबहुँ न कीजै। काहू की नहिं बस्तु हरीजै ॥
चोरी त्यागै सो सतबादी। ता पर रीझैं राम अनादी ॥
जारी के कर्म ऐसे मानो। पर तिरिया कूँ माता जानो ॥
तीजे हिंसा त्यागहिं कीजै। दया राखि जीवन सुख दीजै ॥
दया बराबर तप नहिं कोई। आतम पूजा ता सों होई ॥
कर्म छुटन की भारी गैला। ज्यों साबुन उजला पट[1] मैला ॥
सुकदेवा कहैं तन के कहे। तीन कर्म अब मन के रहे ॥

मन के कर्मों का निर्णय

॥ दोहा ॥

कहौं जो मन के तीन अब, झीनी जिन की बात।
गुरू दिखाये दीखई, बिधि औरी न दिखात ॥२०॥
खोटी चितवन बैर हीं, अरु तीजा अभिमान।
इन सों कर्म लगैं घने, मेटैं संत सुजान ॥२१॥

॥ चौपाई ॥

खोटी चितवन खोलि दिखाऊँ। जा सों कहिये सो समुझाऊँ ॥
कबहूँ चितवै पर नारी कूँ। कबहूँ चितवै फल बारी कूँ ॥

(१) बस्त्र।

मन हीं मन में भोगै भोग। हाथ न आवै उपजै सोग॥
कबहूँ चितवै वा कूँ मारौं। कबहूँ चितवै फाँसी डारौं॥
कबहूँ चितवै द्रब्य चुराऊँ। वा को धन अपने घर लाऊँ॥
भाँति भाँति चितवन उपजावै। बुरे मनोरथ कर्म लगावै॥
ता तें या का करै उपाऊ। होय जो साधू कर्म छुटाऊ॥
जो चितवै तो हरि गुरु चरना। ब्रह्म बिचार सदा हीं करना॥
खोटी चितवन चितवै नाहीं। सदा रहै थिरता के माहीं॥
कहि सुकदेव सो हिरदै रहै। इत उत कूँ चित नाहीं बहै॥२२

॥ दोहा॥

दूजा कर्म जो बैर है, महा पाप की पोट।
सदा हिया जलता रहै, करै खोट ही खोट॥२३॥

॥ चौपाई॥

बैर भाव में औगुन भारी। तन छूटै जा नरक मँझारी॥
बैरी याद रहै मन माहीं। हरि सें हेत लगन दे नाहीं॥
ता तें बैर भाव नहिं कीजै। या कूँ कर्म लाग नहिं दीजै॥
अरु तीजा जानो अभिमाना। गुरु किरपा सें ता कूँ जाना॥
हूँ हूँ हूँ हूँ करता रहै। नीची होय तो अंतर दहै॥
कबहूँ फूलै मन के माहीं। मो समान कोउ ऊँचा नाहीं॥
मैं हौं यें कर यें कर करिया। मो बिन कारज कछू न सरिया॥
अपने को चतुरा बहु जानै। और सबन कूँ मूरख मानै॥
अभिमानी ऐसा मन लावै। हरि के गुन किरिया बिसरावै॥
गर्ब भरा खोटी बृत धारै। अपने मन में कबहूँ न हारै॥
सुकदेव कहैं याही पहिचानो। नरक जायगा निस्चय आनो॥
रन जीता सुन अभिमान न कीजै। कर्म बचाय परम सुख लीजै॥२४

सुभ असुभ कर्म फल के दृष्टांत

॥ दोहा॥

कृत्यघनी[1] बेमुख भवै, गुरु सें बिद्या पाय।
उन कूँ जानै तनक हीं, आपन कूँ अधिकाय॥२५॥

(१) नाशुकरा।

॥ चौपाई ॥

जैसे इक दृष्टांत सुनाऊँ । कथा पुरानी कहि समुझाऊँ ॥
महा पुरुष इक स्वामी पूरा । ज्ञान ध्यान में था भरपूरा ॥
लच्छन सभी हुते वा माहीं । आठ पहर हरि हीं को ध्याहीं ॥
उनको सिष्य आन इक भयो । वहि उपदेस जो नीको दयो ॥
करि कै प्यार निकट जो राखै । प्रीति करी अरु सब कुछ भाखै ॥
फिर रामत की अज्ञा लीन्ही । उनहूँ करि किरपा तब दीन्ही ॥
पहुँचा एक नगर अस्थाना । ह्वाँ के नरन सिद्ध बड़ जाना ॥
ठहराया अरु पूजा कीन्ही । बहुत नरन ने कंठी लीन्ही ॥
बहुतक प्रानी आवैं जावैं । संध्या भोर सीस बहु नावैं ॥
महिमा देखि फूल मन माहीं । कहा कि हम सतगुरु भी नाहीं २६

॥ दोहा ॥

गद्दी पर बैठा रहै, तकिया बड़ी लगाय ।
बहुत रहैं अज्ञा बिषे, सिर पर चँवर ढुराय ॥२७॥

॥ चौपाई ॥

गुरु प्रताप नहीं वह जानै । अपनी ही बुधि बड़ी जु ठानै ॥
मूरख आगे क्यों नहिं भया । दीन होय करि द्वारे गया ॥
थोड़े ही से बहु इतराना । गुरु की कृपा प्यार न जाना ॥
बार बार सोचै मन सोई । हमरो गुरु क्या ऐसो होई ॥
उन कूँ तो नर कोइ कोइ जानै । हम कूँ सिगरो देस बखानै ॥
दिन दिन बढ़ता दीखै आगे । मेरे भाग बड़े हीं जागे ॥
मेरे मन में ऐसी आवै । उनका सिष्य जु कौन कहावै ॥
वहीं अचानक गुरु ह्वाँ आया । बैठे हीं सिर सिष्य नवाया ।२८।

॥ दोहा ॥

जैसे आते बैसनो, करता वह डंडोत ।
ऐसे ही गुरु से किया, आदर किया न भोत[1] ॥ २९ ॥

(१) बहुत ।

॥ चौपाई ॥

देखि गुरू मन हाँसो ठानी । वाकूँ जाना बहु अभिमानी ॥
मुख सूँ कह कर बहु झिड़कारा । कहा कि तू अभिमानी भारा ॥
नीकी बुधि तेरी गइ खोई । बसी मूर्खता घट में सोई ॥
मेरा सब उपदेस बिसारा । जग मोहन कूँ मन में धारा ॥
दस बीसन कूँ सिष करि भूला । गद्दी पर बैठो बहु फूला ॥
सिष ने कहा और क्या कीया । वही किया अज्ञा तुम दीया ॥
तुमने हीं सतसंग बताई । कीजो दीजो जिन मन लाई ॥
सिष सखा करि संग बड़ाई । मेरी तुम्हरी भई बड़ाई ॥
देखि ईर्षा तुम कूँ आई । हमरी देखी बहु अधिकाई ॥
फिरि हँसि गुरु कहि तू अज्ञानी । मैं कहि संगति तैं नहिं जानी ॥
मैं कहि भक्तन का संग कीजै । सत पुरुषन के चरन गहीजै ॥
दिन दिन ज्ञान होय सरसाई । हरि गुरु से है प्रीति सवाई ॥
तेरी तौ गति औरै भई । महा अबिद्या मेंमति ठई ॥३०॥

॥ दोहा ॥

झरना मूँदे ज्ञान के, छाय रहा अज्ञान ।
राम रुठावन हीं किया, भई मुक्ति की हान ॥३१॥
कहा बात पूँजी कहा, इतने में गयो भूलि ।
मति ओछी घट थोथरा, ता पर बैठो फूलि ॥३२॥
बिभव प्राप्त ते सिद्ध जो, देह बिसरजन होय ।
वह बीनो गुरु को तजै, जाय नरक को सोय ॥३३॥
कछू तपस्या ना करी, नाहिं किया कछु जोग ।
ना तरु लगो समाधि हीं, ले बैठो तू भोग ॥३४॥
रज गुन तम गुन ले लिया, तजा सतो गुन अंग ।
हरि गुरु को दइ पीठ हीं, करि बिषयन कूँ संग ॥३५॥
भक्ति भाव कूँ छोड़ि के, करी दंभ की हाट ।
मुक्ति पंथ कूँ तजि दिया, लई नरक की बाट ॥३६॥

इन बातन सों क्या सरै, बहुत भया बिख्यात ।
तुम से अधिकी मूढ़ नर, जग के घने दिखात ॥३७॥
हुकुम बड़ा माया बड़ी, नामी बड़े जु भूप ।
नर नारी बहु टहल में, सुंदर अधिक अनूप ॥३८॥
संतन की गति और है, हरि गुरु से सन्मुक्ख ।
मुक्त होय छूटैं सबै, जन्म मरन के दुक्ख ॥३९॥
जगत बड़ाई में फँसे, परी अबिद्या छाहिं ।
नरक भुगति जम दंड हीं, फिरि चौरासी माहिं ॥४०॥

॥ चौपाई ॥

हरि औ गुरु को सिर पर धरिए । सतपुरुषन को संगति करिये ॥
रहिये साधुन के संग माहीं । ध्यान भजन जहँ छूटै नाहीं ॥
है परिपक्क जहाँ मन रहो । गुरु मत दया दीनता गहो ॥
सहज सहज उपदेस लगावो । भूले कूँ हरि बाट बतावो ॥
तारन तरन बहुत जन भये । छिमा दीनता धारे गये ॥
पै उनकूँ अभिमान न आया । नेक न पड़ी अबिद्या छाया ॥
आपा मेटि गुरू हीं राखा । जब बोले तब गुरु हीं भाखा ॥
तू अभिमानी जन्म गँवाया । पाप बोझ सिर घना उठाया॥४१॥

॥ दोहा ॥

वोहीं नभ की ओर से, बानी भई जु आय ।
कियो गुरू से मान तैं, चौरासी कूँ जाय ॥४२॥
ह्वाँ सूँ गुरु रमते भये, सिष्यहिं दे फटकार ।
कहा कि तेरे तन बिषे, हूजो बड़ो बिकार ॥४३॥
ता पीछे कछु दिनन में, देही भयो बिकार ।
निकट न आवै तासु के, ह्वाँ के कोउ नर नार ॥४४॥
कुष्ट भयो अर्धङ्ग को, रहो न काहू जोग ।
आठ पहर वा कूँ भयो, निरा सोग ही सोग ॥४५॥

तन तजि कै नरकै गयो, फिरि चौरासी माहिं।
जो गुरु से मानै करै, ता की गति ह्वै नाहिं ॥४६॥
कहैं गुरु सुकदेव जी, चरनदास परबीन।
मन सों तजि अभिमान कूँ, गुरु सों रहिये दीन ॥४७॥
मान न काहू सूँ करै, सब हीं सूँ आधीन।
समरथ हरि की भक्ति में, जगत काज सों हीन ॥४८॥
दस कर्मों कूँ जानिये, महा पाप की खान।
तन मन बचन संभारिये, यही जु अधिक सयान ॥४९॥

दृष्टांत

॥ दोहा ॥

कहूँ एक दृष्टांत हीं, सो परमारथ भेस।
सुनि समुझै हिरदै धरै, तौ लागै उपदेस ॥५०॥
रहै सोहावन नगर इक, बसैं लोग सुखमान।
नर नारी सुन्दर सबै, अरु धनवंत बखान ॥५१॥
नया करैं जहँ भूप हीं, बरष दिना के माहिं।
संबत बीते तासु के, फिर वे राखैं नाहिं ॥५२॥

॥ चौपाई ॥

डारि देयँ नद्दी के पारा। जहाँ भयानक अधिक उजारा[1] ॥
पसू आदि ताकूँ भखि जावैं। सुपना सा देखै बिनसावै ॥
नया भूप करि अज्ञा मानैं। ताकूँ अपना ईसुर जानैं ॥
रहैं हुकुम माहीं कर जोरैं। वा कूँ बचन न कबहूँ मोरैं ॥
छत्तरधारी ह्वाँईं डारैं। सो मैं आगे कही उजारैं[1] ॥
कई सैकड़ों ऐसे भये। चेते नाहीं निस्फल गये ॥
राजा नया और इक किया। सो वह समझा चेता हिया ॥
मन हीं मन में कहै बिचारे। बहुत भूप जंगल में डारे ॥५३॥

(१) उजाड़।

॥ दोहा ॥

बरस दिना जब बीति है, हमहुँ क देहैं डारि।
सरिता हीं के पार हीं, अधिको जहाँ उजारि[1] ॥५४॥

॥ चौपाई ॥

या कूँ कछू उपाय बिचारौं। ता सेती यह जन्म न हारौं॥
एक दिना उन यही बिचारा। देखन गयो नदी के पारा॥
जहाँ भूप जा जा करि मरते। तिन के हाड़ हुईं जा गिरते॥
खड़ा जु होय देखि मन आई। नीको ठौर बनाऊँ ह्याँईं॥
दृष्टि उठाय ऊँचि जो कीन्ही। कामदार कूँ अज्ञा दीन्ही॥
बन काटो अज्ञा दइ एता। फेरक पाँच कोस में जेता॥
सुँदर सा इक कोट बनावो। ता में सुन्दर बाग रचावो॥
करो हवेली ता के माहीं। जैसी भूपन हूँ के नाहीं॥
गिलम[2] बिछौने परदे लावो। औ तैयारी सबै करावो॥
होय चुकै जब मोहिं सुनावो। बहुत इनाम अधिक तुम पावो।५५

॥ दोहा ॥

वैसे हीं बनने लगी, जैसी अज्ञा दीन।
बनते बनते बन चुकी, सुन्दर अधिक नवीन ॥५६॥

॥ चौपाई ॥

फिरि राजा कूँ आनि सुनाया। राजा सुनि बहुतै सुख पाया॥
आछी बस्तु वहाँ पहुँचाई। ह्याँ जो रही न सुरति लगाई॥
कहा कि एक दिना ह्वाँ जाना। छिन छिन होय अवधि की हाना॥
पाँचक गाँव कोट के साथा। किये दिये लिखि अपने हाथा॥
अपना एक हितू मन भाई। भरी कचहरी लिया बुलाई॥
करि इनाम ता कूँ वह दिया। वा कूँ देखा साँचा हिया॥
और कही जो राजा होवै। वाहि तिलाक याहि जो खोवै॥
वोहीं आठ महीने बीते। करनी करि भये मन के चीते।५७।

(१) उजाड़। (२) गलीचा।

॥ दोहा ॥

है निचिंत आनंद भये, चिंता भय नहिं कोय।
अपना कारज करि चुके, ह्याँ ह्वाँ एकहिं होय ॥५८॥

॥ चौपाई ॥

सुख ही में वह वर्ष बिताया। अवधि बीतिफिरिवह दिनआया॥
सब उमराव[1] जो घिरि कर आये। नया भूप करने कूँ लाये॥
यहि सिंहासन सूँ दियो डारी। कहा कि तुम्हरी बाती बारी॥
ऐसे कहि कर गहि लै चाले। पार नदी के जंगल घाले॥
सुभ करनी कूँ करि वह राजा। अपने महलन जाय बिराजा॥
इत से भी उत सुख बहु भारी। ना कोइ बैरी ना जंजारी॥
अपनी करनी से सुख पावै। रहै असोक न चिंता आवै॥
कहि सुकदेव चरन हीं दासा। सुभ करनी करि पाया बासा।५९।

॥ दोहा ॥

ऐसे मानुस देह कूँ, जानहु नगर समान।
राजा या में जीव है, सुभ करनी परमान ॥६०॥

॥ चौपाई ॥

नाहिं तो चौरासी जंगल है। भाँति भाँति का जितहीं भय है॥
पसू पसू कू जित भखि जावै। नित भय मानि नहीं सुख पावै॥
बहु दुख पावै खोटी करनी। जैसी करनी तैसी भरनी ॥६१॥

॥ दोहा ॥

भूप उमरि अपनी किया, अपना पूरन काम।
ऐसे ही सुभ कर्म सूँ, तुम हूँ पावो धाम ॥६२॥

दृष्टांत ३

॥ चौपाई ॥

कथा कहौं इक और पुरानी। करनी करै सु समझै प्रानी॥
इंदु नाम इक ब्राह्मन हुता। जा के दस सुत और इक सुता॥

(१) अमीर।

सुता ब्याह दई घर की हुई। जाके पीछे माता मुई॥
पिता मुवा दस पुत्र रहे थे। आपस में सब बैठि कहे थे॥
ऐसी कछु जो करनी कीजै। जग में ऊची पदवी लीजै॥
इक ने कही हूजिये भूपा। सुन्दर देही धरो अनूपा॥
तेज मुल्क में होवे भारी। हुकुम जु माने नर अरु नारी॥
और एक ऐसे उठि बोला। सावधान ह्वै अंतर खोला॥६३॥

॥ दोहा ॥

राजा हीं को हुकुम तौ, थोरे ही में जोय।
ऐसी करनी कीजिये, भूप चक्रवै[1] होय॥६४॥
एक दीप नौ खंड में, जा कूँ पूरा राज।
एक और उठि बोलिया, यह भी ओछा साज॥६५॥
चक्रवर्ति में इंद्र बड़, देवन हूँ कूँ भूप।
उमर बड़ी आनंद बड़े, दुख की लगै न धूप॥६६॥

॥ चौपाई ॥

करनी करत इन्द्र हीं लोका। हो कर राजा कीजै भोगा॥
जहाँ अप्सरा नित करत हैं। सुंदर अधिकी रूप धरत हैं॥
और बड़ा भाई यों भाखा। सुर पति हूँ कूँ नाहीं राखा॥
कहा कि पदवी ब्रह्मा को सी। और न दीखै काहू ही सी॥
जा के एक दिवस हीं माहीं। चौदह इन्द्र सर्व ह्वै जाहीं॥
सब ब्रह्मांड आसरे वा के। बिनसि जायँ मिटि जाये जा के॥
तीनि लोक का पितावही है। बेद पुरानन माहिं कही है॥
करनी करि करि ब्रह्मा हूजै। ऐसी पदवी क्यों नहिं लीजै॥६७॥

॥ दोहा ॥

सगरे यों उठि बोलिया, सत्य सत्य यह बात।
ऐसा ही अब कीजिये, ठहराई सब भ्रात॥६८॥

---

(१) चक्रवर्ती, चारों दिसा का।

॥ चौपाई ॥

दसहू करन तपस्या लागे। पार ब्रह्म की ओरी पागे॥
अधिक तपस्या कीन्ही भारी। मास सूखिगा दीख नारा[1]॥
हाड़ तुचा चिपटी रहि गई। लोहू धातु कछू ना ठई॥
सब जन चित्रहिं से रहि गये। क्लिष्ट[2] तपस्या ऐसे ठये॥
फूल पात जलहूँ नहिं लीन्हा। ऐसा तप दसहूँ ने कीन्हा॥
तन त्यागे दूजे ही जन्मा। दसहूँ भ्रात हुए जो ब्रह्मा॥
जिनके दस ब्रह्मांड बने हैं। एक एक तिन माहिं ठने हैं॥
करनी कबहुँ न निस्फल जावै। जो मन वारै सोई पावै॥६६॥

॥ दोहा ॥

करनी सूँ भये इन्द्र हूँ, करनी ब्रह्मा सोय।
करनी सूँ ईसुर भये, सुकदेवा कहै सोय॥७०॥
दस हजार इक बीस हीं, बरस तपस्या कीन्ह।
हरि जा कूँ बदलो दियो, माँगो सो बर दीन्ह॥७१॥
चारों जुग के माहिं जो, करनी हीं परधान।
गुरु सुकदेवा कहत है, चरनदास उर आन॥७२॥
उज्जल करमन के किये, दिन दिन उज्जल होय।
मन में उपजै भक्ति हीं, प्रेम पदारथ सोय॥७३॥

॥ चौपाई ॥

चरन दास तुम करनी कीजै। याहीं में मन नीके दीजै॥
ऐसा जनम बहुरि नहिं पैहौ। बीति जाय पुनि बहु पछितैहौ॥
मानुष देह या दुर्लभ जानौ। वा कूँ पा सुभ करनी ठानौ॥
या देही में करी कमाई। जाय स्वर्ग में नव निधि पाई॥
मूरख करनी को नहिं जानै। कथनी कथि कथि बहुत बखानै॥
थोथी कथनी काम न आवै। थोथा फटकै उड़ि उड़ि जावै॥७४

---

(१) नाड़ी, हड्डी। (२) क्लेशवाली।

॥ दोहा ॥

कथनी हीं के बीच में, लीजै तत्व विचार ।
सार सार गहि लीजियों, दीजो डारि असार ॥७५॥

॥ चौपाई ॥

थोथी कथनी वही जु जानौ । बिन करनी जो करै बखानौ ॥
लोक परलोक न सोभा पावै । बकि बकि बकि खालीमरि जावै॥
कथनी के सूरा बहु जाने । करनी में कायर अरु याने[1] ॥
सूरा वही जो करनी करै । दया धरम लै सन्मुख अरै[2] ॥
पाँव धरै सो नाहिं उठावै । करनी करता चला जु जावै ॥
फिरै जबहिं फल लै कर आवै । सो वह सूरा मल्ल कहावै ॥
कायर बीचहिं सूँ फिरि आवै । सो वह करनी कूँ बिसरावै ॥
आपन खोंट न जानै भोंदू । वह तो कथनी ही का गेंदू ॥७६

॥ दोहा ॥

ऐसे जग में बहुत हैं, वैसे जग में नाहिं ।
कोई कोई देखिये, सतगुरु के मध माहिं ॥७७॥

॥ चौपाई ॥

होनहार को बहुत बतावैं । पै ता को कछु मरम न पावैं ॥
कहैं कि होनी होय सो होई । ता कूँ मेटि सकै, नहिं कोई ॥
या कूँ समुझि उपाय न करिया । सरधा तजि कायर ह्वै परिया ॥
समुझि निखट्टू गृही भये हैं । भेख धारि बिन करनि रहे हैं ॥
जानत नाहिं जो पिछली करनी । अब के भई जो होनी भरनी ॥
परालब्ध अरु भाग कहावै । पिछले करमन से उपजावै ॥
अब के करै सो आगे आवै । कछू कछू फल अभी दिखावै ॥
कै काहू गाली दै देखो । कै काहू को मारि बिसेखो ॥
कै काहू को असन[3] खवावो । कै काहू को सीस नवावो ॥
कै करि चोरी धूत[4] हिं खेलौ । कै काहू को गुस्सा झेलौ ॥

(१) बच्चे । (२) अड़े । (३) भोजन । (४) जुवा ।

दोनों का फल आगे आवै। चरनदास सुकदेव बतावै ॥
प्रगट देखिये यही तमासा। नीच ऊँच करनी प्रकासा ॥७८॥

॥ दोहा ॥

कोटि यही उपदेस है, यही जु सगरी बात।
करनी हीं बलवंत है, यों सुकदेव दिखात ॥७९॥
मन की करनी ज्ञान है, परमातम लखि लेय।
ब्रह्म रूप ह्वै जाय जब, छूटै सब हीं भेय ॥८०॥
भवसागर में भय घने, ता की लगे न आँच।
झूँठे को भय बहुत है, भय नहिं ब्यापै साँच ॥८१॥
करनी हीं सूँ पाइये, पारब्रह्म का खोज।
सतगुरु पै चल जाइये, मेटै सब हीं खोज ॥८२॥
बिना किये कछु होय ना, आपहि लेहु विचार।
करनी देखी दूर लौं, सोचा बारम्बार ॥८३॥
चरनदास तो सूँ कहूँ, उठि उद्यम कूँ लाग।
आलस सकल गँवाय के, बिषयन में मत पाग ॥८४॥
कारज लोक प्रलोक के, बिन करनी हों नाहिं।
करनी हीं सूँ होत है, करनी सब के माहिं ॥८५॥
खोटे करमन सूँ दुखी, या दुनिया के बीच।
करनी हीं सूँ होत है, नर ऊँचा औ नीच ॥८६॥
संगति मिलि करने लगे, ऊँचे नीचे कर्म।
बुधि मैली जो होत है, खोवै अपना धर्म ॥८७॥
सत संगति सूँ रहत है, धर्म कुसंगति जाय।
चरनदास सुकदेव कहि, दोनों दिये दिखाय ॥८८॥
धर्म गया जब सत गया, भ्रष्टि भई अति बुद्धि।
तबहिं पाप अरु पुन्न की, कछू रही न सुद्धि ॥८९॥
बिरले जन को होत है, पाप पुन्न की सूझ।
सोइ छूट जग जाल सूँ, बहुतै रहै अरूझ ॥९०॥

तन मन साधै बचन हीं, पाप न लगने देह ।
सुकदेव कहैं चरनदास सुनि, अधिको साधन येह ॥६१॥
सब जीवन सुख दीजिए, सब सों मीठा बोल ।
आतम पूजा कीजिए, पूजा यही अतोल ॥६२॥
दया पुष्प चंदन नवन[१], धूप दीप दे मन्न ।
भाँति भाँति नैबेद सूँ, करै देव परसन्न ॥६३॥
जो कोइ आवे राजसी, देहु बड़ाई ताहि ।
जा कूँ देखो तामसी, करो नम्रता वाहि ॥६४॥
जो कोइ होवे सातुकी, मिलो ताहि तजि मान ।
गुढ़ी[२] खोलि चरचा करो, लीजे तत मत छान ॥६५॥
सब हीं कूँ परसन करै, आप रहै परसन्न ।
बास लहै हरि ध्यान हीं, ह्याँ कहै सब धन धन्न ॥६६॥
राजस तामस सातुकी, छेतर तीनहिं भाँति ।
छेत्रक आतमदेव है, सब कोसहिं ये क्रांति[३] ॥६७॥
सब में देखै आप कूँ, सब कूँ अपने माहिं ।
पावे जीवन मुक्ति कूँ, या में संसय नाहिं ॥६८॥
सब में देखै आतमा, आपन में करि ध्यान ।
यही ज्ञान ब्रह्म ज्ञान है, यही जु है विज्ञान ॥६९॥
अहंकार मिटि ब्रह्म हो, परमातम निर्बान ।
सुकदेवा हो कहत हूँ, चरनदास हिय आन ॥१००॥
जो तैं पूछा सो कहा, भेद कहा सब खोल ।
अरु तेरे हिय में कछू, सकुच खोल कर बोल ॥१०१॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

धन्न सिरी[४] सुकदेव जी, बचन तुम्हारे धन्न ।
सब संदेह मिटाय करि, निस्चल कीन्ह्यो मन्न ॥१०२॥

---

(१) दीनता । (२) गूढ़ बातें । (३) आतमदेव का प्रकाश तीनों कोषों में है । (२) श्री ।

मो से रंक गरीब की, तुम हीं पकरी बाहँ।
भव बूड़त राखा मुझे, चरन कँवल की छाँह ॥१०३॥
आपहिं तुम किरपा करी, मैं कित लहता तोहिं।
तुम कूँ पाऊँ ढूँढ़ करि, इतनी शक्ति न मोहिं ॥१०४॥
ब्यास पुत्र सुकदेव तुम, जक्त माहिं विख्यात।
तुम दरसन दुर्लभ महा, पुरुषन कूँ न दिखात ॥१०५॥
बड़े भाग मेरे जगे, पूरबले परताप।
किरपा श्री गोपाल की, आय मिले तुम आप ॥१०६॥
चरनदास अपना कियो, दियो परम संतोष।
बैठि करूंगो ध्यान ही, अब कुछ रह्यो न सोक ॥१०७॥
चलत फिरत ह्याँ आइया, तुम भरि दीन्ह्यो मोहिं।
नैन प्रान तन मन सभी, देखत अरपे तोहिं ॥१०८॥
चाह मिटी सब सुख भये, रहा न दुख का मूल।
चाहूँ तो चाहूँ यही, तुम चरनन की धूल ॥१०९॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

जोग तपस्या कीजियो, सकल कामना त्याग।
ता कूँ फल मत चाहियो, तजो दोष अरु राग ॥११०॥
अष्ट सिद्धि जो पै मिलैं, नेक न कीजौ नेह।
धार हिरदै परमातमा, त्यागे रहियो देंह ॥१११॥
जेती जग की बस्तु है, ता में चित्त न लाय।
सावधान रहियो सदा, दियो तोहिं समुझाय ॥११२॥
बार बार तो सूँ कहूँ, ह्याँ मत दीजो चित्त।
सिद्धि स्वर्ग फल कामना, तजि कीजो हरि मित्त ॥११३॥
जो कीजे हरि हेत हीं, ए हो चरनहिं दास।
भक्ति जोग अरु सुभ करम, नीको ठौर निवास ॥११४॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

ऐसे ही सब करूँगो, तुम चरनन परताप।
अष्ट सिद्धि समुझो चहूँ, बरनन कीजै आप ॥११५॥
समझूँ तो त्यागूँ उन्हैं, करवावो पहिचान।
कहा नाम लच्छन कहा, कौन रहै अस्थान ॥११६॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

कहि सुकदेव बरनन करूँ, अष्ट सिद्धि के नाँव।
लच्छन गुन सब हीं सहित, नीके तोहिं समुझाँव ॥११७॥

अष्ट सिद्धि के नाम

॥ चौपाई ॥

प्रथमै अनिमा सिद्धि कहावै। चाहै तौ छोटा ह्वै जावै ॥
अनु[1] समान छिपि जावै सोई। ऐसी कला जो पावै कोई ॥
दूजी महिमा लच्छन एता। चाहै बड़ा होय वह जेता ॥
तीजी लघिमा वह कहवावै। पुष्प तुल्य हलका ह्वै जावै ॥
चौथी गरिमा कहूँ बिचारी। चाहै जितना होवै भारी ॥
पचवीं प्रापति सिद्धि कहावै। जित चाहै तित हीं ह्वै जावै ॥
छठवीं पराकाम्य गुन धरै। सक्ति पाय चाहै सो करै ॥
सतवीं सिद्धि ईसता रानी। सब कूँ अज्ञा माहिं चलानी।११८।

॥ दोहा ॥

बसीकरन सिधि आठवीं, कहैं सिरी[2] सुकदेव।
चाहै जिसको बसि करौ, अपना हीं करि लेव ॥११९॥
चरनदास सिद्धैं कहीं, समुझि लेहि मन माहिं।
जो हैं जनुवाँ राम के, इन में उरझैं नाहिं ॥१२०॥

---

(१) बहुत छोटा। (२) श्री।

॥ चौपाई ॥

जोग किये आठौ सिधि पावै। कै भोगै कै चित न लगावै ॥
जोग किये मन जीता जावै। पलटै जीव ब्रह्म गति पावै ॥
जोगेसुर चाहै सो करै। भरी रितावै[1] रीती भरै ॥
जोगेसुर ईसुर ह्वै जाई। दिन दिन बाढ़ै कला सवाई ॥
तजिये भोग जोग हीं करिये। तिरगुन परे ध्यान हीं धरिये ॥
चौथे पद में करै निवासा। काहू बिधि का रहै ना साँसा[2] ॥
जोग करै सोई परबीना। सुकदेव कहैं परगट कहि दीना॥१२१

॥ दोहा ॥

पोथी माहीं देखि कर, करै जो कोई जोग।
तन छीजै सिधि ना भवै, देही आवै रोग ॥१२२॥
देखि देखि गुरु सूँ करै, ले अज्ञा रहि संग।
सिद्धि होयँ साधन सबै, कछू न आवै भंग ॥१२३॥
जोग तपस्या में बड़ा, पहुँचावै हरि पास।
जनम मरन बिपता मिटै, रहै न कोई आस ॥१२४॥
ज्ञान सुरति दोउ एक है, पलटि अगोचर जाय।
शब्द अनाहद में रतै, मन इन्द्री थिर पाय ॥१२५॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

मैं समझी जानी सभी, सूझि भई हिय माहिं।
किरपा करि जो जो कहा, ता कूँ बिसरूँ नाहिं ॥१२६॥

॥ चौपाई ॥

ब्यास पुत्र तुम मम गुरु देवा। करूँ मानसी तुम्हरी सेवा ॥
मन में तुम्हरी सेवा साजूँ। तुम सूँ पूछि करू सब काजू ॥
मेरे ध्यान सिताबी आये। जो थे सो संदेह मिटाये ॥
मैं तो ध्यान करत ही रहूँ। तुम्हरी मूरति हिरदे गहूँ ॥

---

(१) खाली करै। (२) संसय।

मेरे जीवन प्रान अधारा। मैं नहिं रहूँ चरन सूँ न्यारा॥
तुम्हरो चरनन दास कहाऊँ। बार बार तुम पै बलि जाऊँ॥
तुम हीं को ईसुर करि मानूँ। पार ब्रह्म तुम हीं कूँ जानूँ॥
और न कोई दूजी आसा। मो हिरदय में राखौ बासा॥१२७

॥ दोहा ॥

अपने चरनहिं दास को, सब बिधि दिया अघाय।
अस्तुति करूँ तो क्या करूँ, मो पै कही न जाय॥१२८॥

गुरुमुख लच्छन

॥ चौपाई ॥

अब गुरुमुख के लच्छन गाऊँ। जुदे जुदे करि सब समझाऊँ॥
इन कूँ समुझि धरै हिय कोई। पूरा गुरुमुख कहिये सोई॥
प्रथमहिं गुरु सूँ झूठ न बोलै। खोटी खरी करै सब खोलै॥
दूजे गुरु कूँ पै न लगावै। निस्चय गुरु के चरन मनावै॥
तीजे अज्ञाकारी जानो। इन लच्छन गुरुमुखी पिछानो॥
जो कोइ गुरु का लेवै नाम। ताकूँ निहुरि करै परनाम॥
जो कहुँ देखै गुरु का बाना। ता कूँ जानै गुरू समाना॥
चरनदास सुकदेव बखानै। गुरु भाई कूँ गुरु सम जानै॥१॥

॥ दोहा ॥

गुरु भाई कूँ पूजिये, धरिये चरनन सीस।
चरनोदक फिरि लीजिये, गुरु मत बिस्वा बीस॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

जो कहुँ गुरु का बसतर पावै। हिये लगाय चूमि दृग छूवावै[1]॥
गुरू देस का मानुष आवै। दै परिकरमा सीस नवावै॥
कहाँ दया करि दरसन दीने। मेरे पाप भये सब छीने॥
जो अपने गुरु द्वारे जैये। देखत पौरि[2] बहुत हरखैये[2]॥

---

(१) छुवावै। (२) देवढ़ी।

ह्वाँई सूँ दंडौत जु कीजै। दरसन करि करि सर्बस दीजै॥
फिर ठाढ़ो रहे जोरे हाथा। बैठे जब अज्ञा दें नाथा॥
जो बोलैं सो मन में धरिये। अपने अवगुन सब हीं हरिये॥
चरनदास सुकदेव बतावै। ऐसा गुरुमुख राम रिझावै॥३॥

चुने हुए दोहे जिनमें मनको मोड़ कर गुरू और मालिक की भक्ति में लगाने का उपदेश है

गुरू कहैं सो कीजिये, करैं सो कीजै नाहिं।
चरनदास की सीख सुन, यही राख मन माहिं॥ १॥
कथा सुने ब्रत हूँ किये, तीरथ किये अघाय।
गुरुमुख के हूए बिना, जप तप निस्फल जाय॥ २॥
दुखी न काहू कूँ करै, दुख सुख निकट न जाय।
सम दृष्टी धीरज सदा, गुन सात्विक कूँ पाय॥ ३॥
भँवर गुफा मंडल अखँड, तिरबेनी जहँ न्हान।
नित परबी जहँ होत है, कर पाप की हान॥ ४॥
कँवल हंस दल सातवाँ, सीस मध्य हीं बास।
तहाँ देवता सतगुरू, पूरी करै जो आस॥ ५॥
जग का कहा न मानिये, सतगुरु से ले बुद्धि।
ता कूँ हिय में राखिये, करो सिताबी सुद्धि॥ ६॥
जिन कूँ मन बिरकत[1] सदा, रहैं जहाँ चित होय।
घर बाहर दोउ एक सा, डारी दुबिधा खोय॥ ७॥
कै घर में कै बाहरे, जो चित आवै नाम।
दोनों होयँ बराबरी, क जंगल कै ग्राम॥ ८॥
जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज[2] सर[3] माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं॥ ९॥
अब के चूके चूक है, फिर पछितावा होय।
जो तुम जक्त न छोड़ि हौ, जन्म जायगो खोय॥१०॥

(१) विरक्त। (२) कँवल। (३) तालाब।

छोड़ जगत की बासना, यही जु छुटन उपाव।
हे मन ऐसी धारिये, अब हीं नीको दाँव ॥११॥
जग माँहीं न्यारे रहो, लगे रहो हरि ध्यान।
प्रथवी पर देही रहै, परमेसुर में प्रान ॥१२॥
ज्यों तिरिया पीहर[1] बसै, सुरति रहै पिय माहिं।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि कूँ भूलैं नाहिं ॥१३॥
ज्यों किरपिन[2] बहु दाम हीं, गाड़ि जिमीं के नीच।
सदा वाहि तकतैं रहै, सुरति रहै ता बीच ॥१४॥
तन छूटे हो सरप[3] हीं, जा बैठे वा ठौर।
जहाँ आस तहँ बास है, कहूँ न भरमै और ॥१५॥
जग त्यागो बैराग ले, निस्चै मन कूँ लाव।
आठ पहर साठो घरो, सुमिरन सुरति लगाव ॥१६॥
सब सूँ रखु निरबैरता, गहो दीनता ध्यान।
अंत मुक्ति पद पाइ हो, जग में होय न हानि ॥१७॥
चरनदास यों कहत हैं, बड़ी दीनता जान।
औरन की तो क्या चले, लगै न माया बान ॥१८॥
दया नम्रता दीनता, छिमा सील संतोष।
इन कूँ लै सुमिरन करै, निस्चै पावै मोख[4] ॥१९॥
ये सब लच्छन राम में, परगट दीखैं मोहिं।
जो वै आवैं तुझ बिषे, प्यार करैं हरि तोहिं ॥२०॥
मिटते सूँ मत प्रीत करि, रहते सूँ करि नेह।
झूठे कूँ तजि दीजिये, साँचे में करि गेह[5] ॥२१॥
ब्रह्म सिंध की लहर है, ता में न्हान सँजोय।
कलिमल सब छुटि जायँगे, पातक रहै न कोय ॥२२॥
अरसठ तीरथ तोहि बिषे, बाहर क्यों भटकाय।
चरनदास यों कहत हैं, उलटा हो घट आय ॥२३॥

---

(१) मायके। (२) कंजूस (३) साँप। (४) मुक्ति। (५) घर।

भरमत भरमत आइया, पाई मानुख देंह।
ऐसो औसर फिर कहाँ, नाम सिताबी लेह ॥२४॥
करै तपस्या नाम बिन, जोग जज्ञ अरु दान।
चरनदास यों कहत हैं, सब हीं थोथे जान ॥२५॥
अधिकी ऊँचा नाम है, सब करनी का जीव।
अष्टादस[1] अरु चारि[2] का, मथि कर काढ़ा घीव ॥२६॥
खाते पीते नाम ले, बैठे चलते सोय।
सदा पवित्तर नाम है, करै ऊजला ताय ॥२७॥
नीचन कूँ ऊँचा करै, ऊँचन कूँ करै देव।
देवन कूँ हरि हीं करै, रहै न दूजा भेव ॥२८॥
चारौ जुग में देखि ले, जिन जपिया जिन पाव।
टेक पकरि आगे धसे, परा न पीछे पाँव ॥२९॥
जैसी गति उनकी भई, गावत साध पुरान।
वैसी तेरी होयगी, यह निस्चै करि जान ॥३०॥
बाजीगर बाजी रची, सब गति पूरन साज।
किये तमासे बहुत हीं, तोहिं दिखावन काज ॥३१॥
देखि देखि देखत रहो, अस्तुति मुख सूँ भाखि।
वा की चतुराई सबै, लैकरि मन में राखि ॥३२॥
वैसा तौ रंगरेज ना, वैसा छीपी नाहिं।
वैसा कारीगर नहीं, या दुनिया के माहिं ॥३३॥
अजब अजब अचरज किये, अद्भुत अधिक अपार।
जल थल पवन अकास में, देखो दृष्टि उघार ॥३४॥
सृष्टि बाग माली रची, भाँति भाँति गुलजार।
रीझि रीझि सिर दीजिये, ए ही निरखि बहार ॥३५॥
देखि होय परसन्न हीं, तू वा कूँ गुन मान।
चरनदास जो बुद्धि है, अधिक सुघरता जान ॥३६॥

(१) अट्ठारह पुरान। (२) चार बेद।

बहुत प्यार तो पै करै, तू नहिं जानत सार ।
वाहि भुलाये हीं फिरै, नेक न करै सँभार ॥३७॥
राम बिसारो आदि सूँ, लियो द्रब्य अरु नार ।
याही तें भरमत फिरो, तन धरि बारम्बार ॥३८॥
गई सो गइ अब राखि ले, ए हो मूढ़ अयान ।
निःकेवल हरि कूँ रटो, सीख गुरू की मान ॥३९॥
सोवन में नहिं खोइये, जन्म पदारथ पाय ।
चरनदास ह्वै जागिये, आलस सकल गँवाय ॥४०॥
सोवन हीं में हानि है, जागन में बहु लाभ ।
बुद्धि उपज हीं होत है, मुख पर चढ़ै जु आभ[1] ॥४१॥
दिन को हरि सुमिरन करो, रैनि जागि कर ध्यान ।
भूख राखि भोजन करो, तजि सोवन की बान ॥४२॥
चारि पहर नहिं जगि सकै, आधि रात सूँ जाग ।
ध्यान करो जप हीं करो, भजन करन कूँ लाग ॥४३॥
जो नहिं सरधा दो पहर, पिछले पहरे चेत ।
उठ बैठो रसना रटो, प्रभु सूँ लावहु हेत ॥४४॥
जागै ना पिछले पहर, ता के मुखड़े धूल ।
सुमिरै ना करतार कूँ, सभी गवाँवे मूल ॥४५॥
जागै ना पिछले पहर, करै न आतम ध्यान ।
ते नर नरकै जायँगे, बहुत सहैं जम सान[2] ॥४६॥
जागै ना पिछले पहर, करै न गुरुमत जाप ।
मुँह फारे सोवत रहैं, ताकूँ लागै पाप ॥४७॥
पिछले पहरे जाग करि, भजन करै चित लाय ।
चरनदास वा जीव की, निस्चै गति ह्वै जाय ॥४८॥
पिछले पहरे जाग करि, भरि भरि अमृत पीव ।
बिषै जक्त की ना रहै, अमर होय कर जीव ॥४९॥

(१) आब, रौनक़ । (२) दंड ।

जन्म छुटै मरना छुटै, आवा गवन छुटि जाय।
एक पहर की रात सूँ, बैठा हो गुन गाय ॥५०॥
पहिले पहरे सब जगैं, दूजे भोगी मान।
तीजे पहरे चोर ही, चौथे जोगी जान ॥५१॥
मरजादा की यह कही, क्या बिरक्त परमान।
आठ पहर साठौं घरी, जागै हरि के ध्यान ॥५२॥
जो कोइ बिरही नाम के, तिन कूँ कैसी नींद।
सस्तर लागा नेह का, गया हिये को बींध ॥५३॥
तिन से जग सहजै छुटा, कहा रंक कहा भूप।
चले गये घर छोड़ि कै, धरि बिरक्त का रूप ॥५४॥
जिनको मन बिरकत सदा, रहो जहाँ चित होय।
घर बाहर दोउ एक सा, डारी दुबिधा खोय ॥५५॥
सोये हैं संसार सूँ, जागे हरि की ओर।
तिन कूँ इक रसहीं सदा, नहीं साँझ नहिं भोर ॥५६॥
उनकूँ नींद न आवई, राम मिलन की चीत।
सोवैं ना सुख सेज पै, तजि के हरि सूँ मीत ॥५७॥
कैसे वे हरि सूँ मिले, जिन के ऊँचे भाग।
कैसे वे हरि त्याग के, रहे जक्त सूँ लाग ॥५८॥
सोवन जागन भेद की, को इक जानत बात।
साधू जन जागत तहाँ, जहाँ सबन की रात ॥५९॥
जो जागै हरि भक्ति में, सोई उतरै पार।
जो जागै संसार में, भवसागर में ख्वार ॥६०॥
कै जागत हूका[1] भरा, कै जागा बस काम।
कै जागा जग टहल में, लागि रहा धन धाम ॥६१॥

(१) हुक्का।

ऐसे जनम गँवाय दे, महा मूढ़ अज्ञान।
चौरासी में फिर चले, मन का कहा जु मान ॥६२॥

सतगुरु सरनै आय करि, कहा न मानै एक।
ते नर बहु दुख पाइ हैं, तिन कूँ सुख नहिं नेक ॥६३॥

सतगुरु सरना ना लगे, किया न हरि का खोज।
जो खर कूकर सूकरा, अरु जंगल का रोझ[१] ॥६४॥

पेट भरे भर सोइया, ते नर पसू समान।
पर नारी के आपनी, तिनका नाहीं ज्ञान ॥६५॥

जैसा तैसा खाय करि, पेट भरे भरि लेह।
पड़ कर सोवे भोर लौं, सो सूकर की देह ॥६६॥

हरि चरचा बिन जो बकै, सो कूकर की भूँस।
कहि रनजित वह साँझ लौं, खाय धूँस ही धूँस ॥६७॥

जो पावे सोई चरै, करै नहीं पहिचान।
पीठ लदै हरि ना जपै, ताकूँ खर ही जान ॥६८॥

रोझ[१] जान वा देह कूँ, ता कूँ नहीं बिचार।
फिरै बिना मरजाद हीं, बहुता करै अहार ॥६९॥

बहुता किये अहार ही, मैली रही जो बुद्धि।
हरि के निर्मल नाम को, कसे आवै सुद्धि ॥७०॥

सूच्छम भोजन खाइये, रहिये ना परि सोय।
ऐसी मानुख देह कूँ, भक्ति बिना मत खोय ॥७१॥

जनम चलो ही जात है, ज्यों कूँवे सैलाव[२]।
दौरत मृग की छाँह को, नेक नहीं ठहराव ॥७२॥

या सिगरो उपदेस ही, मैं आपन कूँ कीन।
मो मन कूँ आपा घना, कहीं होय आधीन ॥७३॥

---

(१) लीलगाय। (२) सैलाब।

सतगुरु से माँगूँ यही, मोहिं गरीबी देहु।
दूर बड़प्पन कीजिये, नान्हा हीं कर लेहु ॥७४॥
आदि पुरुष किरपा करो, सब औगुन छुटि जाहिं।
साध होन लच्छन मिलैं, चरन कमल की छाँहिं ॥७५॥
तुम्हरी सक्ति अपार है, लीला को नहिं अंत।
चरनदास यौं कहत हैं, ऐसे तुम भगवंत ॥७६॥
तुम्हरी कहा अस्तुति करूँ, मो पै कही न जाय।
इतनी सक्ति न जीभ को, महिमा कहै बनाय ॥७७॥
किरपा करी अनाथ पर, तुम हो दीना नाथ।
हाथ जोड़ माँगूँ यही, मम सिर तुम्हरा हाथ ॥७८॥
हिय हुलसो आनंद भयो, रोम रोम भयो चैन।
भये पवित्तर कान ये, सुनि सुनि तुम्हरे बैन ॥७९॥
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु, गुरू देवन के देवा।
सर्ब सिद्धि फल देव, गुरू तुम मुक्ति करेवा ॥८०॥
गुरु केवट तुम होय, करो भवसागर पारी।
जीव ब्रह्म करि देत, हरो तुम ब्याधा सारी ॥८१॥
श्री सुकदेव दयाल गुरु, चरनदास के सीस पर।
किरपा करि अपनो कियो, सबहीं बिधि सूँ हाथ धरि ॥८२॥
आदि पुरुष परमातमा, तुम्हैं नवाऊँ माथ।
चरनन पास निवास दे, कीजै मोहिं सनाथ ॥८३॥
तुम्हरी भक्ति न छोड़ हूँ, तन मन सिर क्यों न जाव।
तुम साहब मैं दास हूँ, भलो बनो है दाव ॥८४॥
आपै भजन करैं नहीं, औरै मने करैं।
चरनदास वे दुष्ट नर, भ्रम भ्रम नरक परैं ॥८५॥

औरन कूँ उपदेस करि, भजन करैं निष्काम।
चरनदास वै साध जन, पहुँचैं हरि के धाम ॥८६॥
भक्ति पदारथ उदय सूँ, होय सभी कल्यान।
पढ़ै सुनै सेवन करै, पावै पद निर्बान ॥८७॥
भक्ति पदारथ मैं कही, कछु इक भेद बखान।
जो कोइ समझै प्रीति सूँ, छूटै जम दुख सान ॥८८॥
सुन्न सहर हम बसत हैं, अनहद है कुल देव।
अजपा गोत बिचारि ले, चरनदास यहि भेव ॥८९॥
दीद सुनीद जहाँ नहीं, तहाँ न हाल न काल।
जौहर जिसम इसम नहीं, चरनदास नहिं खाल ॥९०॥

❀ समाप्त ❀